www.akhandjyoti.org | www.awgp.org

स्रष्टा का परमप्रसाद : प्रखर प्रज्ञा

लेखक

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

प्रकाशक

युग निर्माण योजना

गायत्री तपोभूमि, मथुरा-२८१००३

फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

सार-संक्षेप

मानवीय अंतराल में प्रसुप्त पड़ा विभूतियों का सम्मिश्रण जिस किसी में सघन—विस्तृत रूप में दिखाई पड़ता है, उसे प्रतिभा कहते हैं । जब इसे सदुद्देश्यों के लिए प्रयुक्त किया जाता है तो यह देवस्तर की बन जाती है और अपना परिचय महामानवों जैसा देती है । इसके विपरीत यदि मनुष्य इस संपदा का दुरुपयोग अनुचित कार्यों में करने लगे तो वह दैत्यों जैसा व्यवहार करने लगती है । जो व्यक्ति अपनी प्रतिभा को जगाकर लोकमंगल में लगा देता है, वह दूरदर्शी और विवेकवान् कहलाता है ।

आज कुसमय ही है कि चारों तरफ दुर्बुद्धि का साम्राज्य छाया दिखाई देता है । इसी ने मनुष्य को वर्जनाओं को तोड़ने के लिए उद्धत स्वभाव वाला वनमानुष बनाकर रख दिया है । दुर्बुद्धि ने अनास्था को जन्म दिया है एवं ईश्वरीय सत्ता के संबंध में भी नाना प्रकार की भ्रांतियाँ समाज में फैल गई हैं । हम जिस युग में आज रह रहे हैं, वह भारी परिवर्तनों की एक श्रृंखला से भरा है । इसमें अनेक परिष्कृत प्रतिभाओं के उभरकर आने व आत्मबल उपार्जित कर लोकमानस की भ्रांतियों को मिटाने की प्रक्रिया द्रुतगति से चलेगी । यह सुनिश्चित है कि युगपरिवर्तन प्रतिभा ही करेगी । मनस्वी-आत्मबलसंपन्न ही अपनी भी—औरों की भी नैया खेते देखे जाते हैं । इस तरह सद्बुद्धि का उभार जब होगा तो जन-जन के मन-मस्तिष्क पर छाई दुर्भावनाओं का निराकरण होता चला जाएगा । स्रष्टा की दिव्यचेतना का अवतरण हर परिष्कृत अंतःकरण में होगा एवं देखते-देखते युग बदलता जाएगा । यही है प्रखर प्रज्ञारूपी परमप्रसाद जो स्रष्टा—नियंता अगले दिनों सुपात्रों पर लुटाने जा रहे हैं ।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

चेतना की सत्ता एवं उसका विस्तार

इस संसार में जड़ के साथ चेतन भी गुथा हुआ है । काम करती तो काया ही दीखती है, पर वस्तुतः उसके पीछे सचेतन की शक्ति काम कर रही होती है । प्राण निकल जाएँ तो अच्छी-खासी काया निर्जीव हो जाती है । कुछ करना-धरना तो दूर, मरते ही सड़ने-गलने का क्रम आरंभ हो जाता है और बताता है कि जड़ शरीर तभी तक सक्रिय रह सकता है, जब तक कि उसके साथ ईश्वरीय चेतना जुड़ी रहती है । दोनों के पृथक् होते ही समूचे खेल का अंत हो जाता है ।

एकाकी चेतना का अपना अस्तित्व तो है । उसकी निराकार सत्ता सर्वत्र समाई हुई है । साकार होती तो किसी एक स्थान पर, एक नाम-रूप के बंधन में बँधकर रहना पड़ता और वह ससीम बनकर रह जाती । इसलिए उसे भी अपनी इच्छित गतिविधियाँ चलाने के लिए किन्हीं शरीर कलेवरों का आश्रय लेना पड़ता है । इस प्रकार प्रत्यक्ष परिचय प्राप्त करना संभव है । निराकार तो प्रकृति की लेसर, एक्स-किरणें आदि अनेक धाराएँ काम करती हैं, पर उनको समझ सकना खुली आँखों से नहीं वरन् किन्हीं सूक्ष्म उपकरणों के सहारे ही संभव हो पाता है । गाड़ी के दो पहिए मिल-जुलकर ही काम चलाते हैं । इसी प्रकार इस संसार की विविध गतिविधियाँ विशेषतः प्राणिसमुदाय की इच्छित हलचलों के पीछे अदृश्य सत्ता ही काम करती है, जिसे ईश्वर आदि नामों से जाना जाता है ।

विराट् ब्रह्मांड में संव्याप्त सत्ता को विराट् ब्रह्म या परमात्मा कहते हैं । वही सर्वव्यापी, न्यायकर्त्ता, सत्-चित्-आनंद आदि विशेषणों से जाना जाता है । उसी का एक छोटा अंश जीवधारियों के भीतर काम करता है । मनुष्य में इस अंश का स्तर ऊँचा भी है और अधिक भी, इसलिए

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

जाती है । यह अपने निजी पुरुषार्थ के ऊपर अवलंबित है कि उसे विकसित किया जाए या ऐसे ही उपेक्षित रूप में—गई-गुजरी स्थिति में वहीं पड़ी रहने दिया जाए ।

इस सम्मिश्रण का जहाँ भी अपेक्षाकृत अधिक विस्तृत स्वरूप दिखाई पड़ता है, उसे प्रतिभा कहते हैं । सदुद्देश्यों के लिए प्रयुक्त किए जाने पर यही प्रतिभा देव-स्तर की बन जाती है और अपना परिचय महामानवों जैसा देती है, किंतु साथ ही यदि मनुष्य अपनी उपलब्ध स्वतंत्रता का उपयोग अनुचित कामों में करने लगे तो वह दुरुपयोग ही दैत्य बन जाता है । दैत्य अपने और अपने संपर्क वालों के लिए विपत्ति का कारण ही बनते हैं; जबकि देवता पग-पग पर अपनी शालीनता और उदारता का परिचय देते हुए अपने प्रभाव-क्षेत्र में सुख, शांति एवं प्रगति का वातावरण बनाते रहते हैं । दैत्य-स्तर के अभ्यास बन जाने पर तो पतन और पराभव ही बन पड़ता है । उसमें तात्कालिक लाभ दीखते हुए भी अंततः दुर्गुणों का दुष्परिणाम ही प्रत्यक्ष होता है ।

सृष्टि के नियम में कर्म और फल के बीच कुछ समय लगने का विधान है । बीज बोने पर उससे वृक्ष बनने में कुछ समय लग जाता है । गर्भाधान के कई मास बाद बच्चा उत्पन्न होता है । आज का दूध कहीं कल जाकर दही बनता है । अभक्ष्य खा लेने पर दस्त-उल्टी आदि होने का सिलसिला कुछ समय बाद आरंभ होता है । मनुष्यों में यह बालबुद्धि देखी जाती है कि वे तत्काल कर्मफल चाहते हैं, देर लगने पर अधीर हो जाते हैं और यह चाहते हैं कि हथेली पर सरसों जमे; कल तक उसमें पौधे जमने की प्रतीक्षा न करनी पड़े । उतावली आतुरता उत्पन्न करती है और मनःस्थिति प्रायः अर्द्धविक्षिप्त की-सी बना देती है,

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

या दुःखदायी ही क्यों न हो । वह विवेकवान् दूरदर्शिता न जाने कहाँ चली जाती है जिसे अपनाकर विद्यार्थी विद्वान्, दुबले पहलवान, मंदबुद्धि तीव्रबुद्धि एवं निर्धन और पिछड़े धनवान बनते हैं । यह एक ही मनुष्य की प्रधान भूल है, जिसके कारण वह अपने जीवन का उद्देश्य, स्वरूप और वरिष्ठता तक भूल जाता है—मार्ग से भटककर झाड़-झंखाड़ों में मारा-मारा फिरता है । इस भूल को देखकर कई बार यह भी स्वीकारना पड़ता है कि ''मनुष्य वस्तुतः ईश्वर की संतान तो है ही नहीं वरन् डार्विन के कथनानुसार वह बंदर की ही अनगढ़ औलाद है ।''

यह व्यंग्य-उपहास मनुष्य के अचिंत्य चिंतन का है । इसी के कारण उसके चरित्र और व्यवहार में भ्रष्टता घुस पड़ती है और तरह-तरह के आक्षेप-उलाहना लगने शुरू होते हैं । दुष्ट चिंतन ही भ्रष्ट आचरण का निमित्त बनता है और इसी के कारण अनेक अवांछनीयताएँ उसके सिर पर लद लेती हैं । कहना न होगा कि कर्मफल भोगे बिना किसी को छुटकारा नहीं; भले ही वह भटकाव के कारण ही क्यों न बन पड़ी हो । चारे के लोभ में चिड़ियाँ और मछलियाँ बहेलियों के हाथ पड़ती और अपनी जान गँवाती देखी गई हैं । जो बोया है वही तो काटना पड़ेगा; भले ही पीछे सतर्कता बरती गई हो या समझदारी से काम लिया गया हो ।

यही है भ्रांति, विकृति और विपत्ति का केंद्र । इसके भँवर में फँसकर अधिकांश लोग गर्हित गतिविधियाँ अपनाते और दुर्गति के भाजन बनते हैं । यदि इस भूल से बचा जा सके तो मनुष्य को ईश्वर का उत्तराधिकारी, ज्येष्ठ राजकुमार कहने में किसी को क्यों आपत्ति हो ? फिर उसकी प्रवृत्ति स्वार्थी बनकर आनंद का रसास्वादन करते रहने में क्यों किसी प्रकार

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

जाने पर वंदीगृह के कैदी जैसी विडंबनाएँ सहनी पड़ें ? क्यों मरघट में रहने वाले व्यक्तियों जैसा नीरस, निष्ठुर और हेय जीवन जीना पड़े ? क्यों डरती-डराती और रोती-रुलाती जिंदगी जीनी पड़े ?

इस संसार में अंधकार भी है और प्रकाश भी; स्वर्ग भी है और नरक भी; पतन भी है और उत्थान भी; त्रास भी है और आनंद भी। इन दोनों में से जिसे चाहे, मनुष्य इच्छानुसार चुन सकता है। कुछ भी करने की सभी को छूट है, पर प्रतिबंध इतना ही है कि कृत्य के प्रतिफल से बचा नहीं जा सकता। स्रष्टा के निर्धारित क्रम को तोड़ा नहीं जा सकता। करने की छूट होते हुए भी उसे परिणाम भुगतने के लिए सर्वथा बाध्य रहना पड़ता है। यह दूसरी बात है कि इस प्रक्रिया के पकने में कुछ विलंब लगता है। मुकदमा दायर होने और सजा मिलने में अपने न्यायाधीश भी तो ढेरों समय लगा लेते हैं। ईश्वर का कार्यक्षेत्र तो और भी अधिक विस्तृत है। उसके न्याय करने में यदि देर लग जाती है तो मनुष्य को धैर्य खोने की आवश्यकता नहीं है और न यह अनुमान लगाने की कि वहाँ अंधेरगरदी चलती है। चतुरता के बलबूते अपने यहाँ तो अनेक अपराधी दंड पाने से बच जाते हैं, पर सर्वव्यापी और सर्वसाक्षी न्यायाधीश के न्याय में किसी को ऐसे अवसर नहीं मिलते। इस वास्तविकता से असहमत रहने के कारण ही लोग प्रायः नास्तिक बन जाते हैं—कर्मफल की मान्यता का उपहास उड़ाते हुए स्वेच्छाचार बरतते हैं। विवेक होने की समझ तभी आती है जब समयानुसार क्रिया की प्रतिक्रिया सामने आ खड़ी होती है।

यहाँ तो प्रसंग इस बात का चल रहा है कि ईश्वर और जीव आपस में अविच्छिन्न होकर रह रहे हैं—अत्यंत सघन भाव और अविच्छिन्न

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

www.akhandjyoti.org | www.awgp.org

है कि समर्थ बीज से उपजा समर्थ बालक अभीष्ट सहयोग प्राप्त कर सके और अभवाग्रस्तता की दुःखदायी स्थिति से सरलतापूर्वक छूट सके पर प्रचलित विडंबनाओं में से एक यह भी है कि नितांत निकट रहते हुए भी परिचय ऐसा बना लिया गया है, मानो एक-दूसरे से नितांत अपरिचित हैं । कभी-कभी ऐसा देखा गया है कि विशालकाय नगरों में एक ही बड़े भवन की चारदीवारी में रहने वाले किराएदार एक-दूसरे से परिचित तक नहीं होते । हम अपने शरीर के भीतरी अवयवों को भी पूरी तरह कहाँ समझ पाते हैं ! शरीर में समाएं विषाणुओं का पता नहीं चलता और यह भी नहीं बन पड़ता कि उनके कारण उत्पन्न होने वाले खतरों को समझ सकें और समय रहते कुछ उपाय-उपचार कर सकें । समझदार कहे जाने वाले मनुष्य के इस भुलक्कड़पन को देखते हुए उसे नासमझ कहा जाए तो कुछ भी अनुचित न होगा । स्वस्थ दीखने वाले भी अस्वस्थता से जकड़े हुए हैं—घुन लगी लकड़ी की तरह भीतर-ही-भीतर पोले हो रहे हैं; स्थिति इतनी बदतर है कि अणु से लेकर विराट् विभु के कण-कण में एक अत्यंत सुव्यवस्था के संव्याप्त होने पर भी अपनी अकल यही धोखा देती रहती है कि इस खेत का कोई बोने वाला या रखवाला नहीं है—चाहे जो करने और चाहे जो पाने की मनमानी करते रहने में कोई हर्ज नहीं । आम प्रचलन में इन दिनों ऐसे ही सोच की भरमार है ।

अनास्था की जननी—दुर्बुद्धि

इस भ्रांत धारणा की एक हानि यह है कि मनुष्य स्वेच्छाचारी व अनाचारी बनता है और अपनी राह पर तीर की नोंक वाले काँटे बोने में लगा रहता है । न चाहते हुए भी अंधकारमय परिस्थितियों को अपने

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

विषमता और विपन्नताएँ प्रायः इसीलिए दीख पड़ती हैं । यदि सोच ठीक रही होती और उसके प्रकाश में सीधे मार्ग पर चल सकना संभव हुआ होता तो यहाँ सब लोग मिल-जुलकर रहते, हँसती-हँसाती जिंदगी जीते, एक-दूसरे को ऊँचा उठाने और आगे बढ़ाने में सहयोग करते तब सीमित साधनों में भी लोग संतुष्ट रहते और अभीष्ट वातावरण बना हुआ होता—हर किसी को अदृश्य मार्ग का दृश्यमान अरुणोदय अनुभव करने का अवसर मिल रहा होता पर उस दुर्बुद्धि को क्या कहा जाए जिसने मनुष्य को मर्यादाओं, प्रतिबंधों और वर्जनाओं को तोड़ने के लिए उद्धत स्वभाव वाला वनमानुष बनाकर रख दिया है ।

आश्चर्य इस बात का है कि मनुष्य को बंदर बनाने वाली दो भूलें एक साथ जन्मी हैं और उनने एक ही चक्कर में पूरी तरह चोट करने के बाद आगे बढ़ने का सिलसिला बनाया है । दूसरी भूल है अपने स्वरूप, कर्त्तव्य और उद्देश्य को भूलने की तथा अपने अति निकट रहने वाले उदार स्वभाव वाले परम सज्जन भगवान् से परिचय बनाने तक की इच्छा न करने की अन्यमनस्कता-अवमानना । अपने से बडी शक्ति के साथ संबंध जोड़ने की महत्ता को छोटे बच्चे तक समझते हैं । वे उसी की ओर खिसकते हैं, जिसके पास खिलौने, चाकलेट और अच्छे उपहारों का सामान होता है; जो प्यार से बुलाते और दुलारपूर्वक गोदी में चढ़ाते हैं । जब इतनी समझ छोटे बालकों तक में पाई जाती है तो आश्चर्य होता है कि मनुष्य भगवान् का घनिष्ठ बनने या उसे अपना घनिष्ठ बनाने में इतनी अधिक उपेक्षा क्यों बरतता है ।

ऊँची सतह के बड़े तालाब में अधिक पानी होता है । पास में ही कोई कम पानी वाला गड्ढा हो तो दोनों की तुलना में असाधारण अंतर

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

ऊँचे तालाब का पानी नीचे गड्ढे को भरना जल्दी आरंभ कर देगा और वह सिलसिला तब तक चलता रहेगा, जब तक कि दोनों जलाशय एक सतह पर नहीं आ जाते । नीचे वाले गड्ढे का पानी निश्चित रूप से ऊँचा उठेगा; भले ही इसमें ऊँचे वाले को कुछ घाटा ही क्यों न रहा हो ।

ईश्वर-सान्निध्य के लिए किए गए प्रयास अंधविश्वास नहीं हैं । यदि उनका सही तरीका न समझा जा सके तो मृगतृष्णा में भटकने वाले हिरण की तरह भ्रमग्रस्तों जैसी धमाचौकड़ी मचाते रहेंगे । तब तो खिन्नता, विपन्नता और असफलताएँ ही हाथ लगेंगी । यदि रुके बिना धीरे-धीरे चलने वाली च्यूँटी भी पर्वत शिखर पर जा पहुँचती है तो फिर कोई कारण नहीं कि ईश्वर-सान्निध्य का सही मार्ग विदित हो जाने पर उस प्रयोजन में आश्चर्यजनक सफलता न मिल सके ।

कहना न होगा कि सशक्तों की समीपता-सान्निध्यता मनुष्य के लिए सदा लाभदायक ही होती है । सुगंध जलाते ही दुकान पर सजी चीजों में से अनेकानेक महकने लगती हैं । चंदन के समीप उगे हुए झाड़-झंखाड़ भी प्रायः वैसी ही सुगंध वाले बन जाते हैं । पारस को छूने से लोहे के सोना बनने वाली उक्ति बहुचर्चित है । कल्पवृक्ष के नीचे बैठने वालों का मनोरथ पूरा होने की बात सुनी जाती है । अमृत की कुछ बुँदें मुँह में चले जाने पर मुरदे जी उठते हैं । भृंग अपने संकल्प के प्रभाव से छोटे कीड़े को अपने साँचे में ढाल लेता है । हरियाली की समीपता में रहने वाले टिड्डे और साँप हरे रंग के हो जाते हैं । सीप में स्वाति की बूँदें गिरने पर मोती बनने और बाँस के ढेरों में बंसलोचन उत्पन्न होने की मान्यता प्रसिद्ध है । इनमें से कितनी बात सही और कितनी गलत

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

कि सज्जनों के महामानवों के सान्निध्य में रहने वाले अधिकांश लोग प्रतापी जैसी विशेषताओं में से बहुत कुछ अपना लेते हैं । राजदरबारी शिष्टाचार का पालन अच्छी तरह कर सकते हैं । अतः हर कोई बड़ों का सान्निध्य चाहता है, किंतु आश्चर्य की बात यह है कि सर्वशक्तिमान् साथी के साथ जुड़ने में हमारे प्रयत्न उतने भी नहीं होते, जितने कि स्वजन-कुटुंबियों के साथ आत्मीयता प्रदर्शित करने में होते हैं । यदि ऐसा बन सकना संभव होता तो हम जड़-से न रहे होते और इस स्थिति में पड़े न रहते, जिसमें कि किसी प्रकार खाते-पीते इन दिनों समय गुजार रहे हैं ।

ईश्वर संबंधी भ्रांतियाँ

इस संदर्भ में एक और भी बढ़ी-चढ़ी मूर्खता जनसाधारण के मन में गहरी जड़ें जमाकर बैठ गई है कि ईश्वर में सिद्धांत-रहित किसी ऐसे भूत-प्रेत की कल्पना समाविष्ट कर ली गई जो निशिदिन उपहार बटोरते और नाक रगड़ते हुए भक्तजनों के पीछे पड़ा रहता है; साथ ही पूजा-पाठ की छुट-फुट टंट-घंट कर देने भर से फूलकर कुप्पा हो जाता है और मनचाहे उपहार-वरदान बाँटकर हर किसी की मनोकामनाएँ पूरी करता है; भले ही वे कितनी ही अनावश्यक या अनुचित क्यों न हों ।

इसके अतिरिक्त इस परमेश्वर में एक और भी बुरी आदत है कि पूजा-पत्री में कोई छोटी-मोटी गलती हो जाए तो भी वह आगबबूला हो जाता है और कल तक जिसे भक्त मानता था, आज उसकी जान लेने तक को तैयार हो जाता है । राजी होने के लिए बढ़े-चढ़े उपहार माँगता है । अपना भक्त किसी दूसरे देवता की पूजा करने लगे तो

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

यही है आज का सशक्त परमेश्वर जिसे जातियों, वर्गों, कबीलों और मत-मतांतरों वाले लोग अपने-अपने तरीके से खोजते और अपनी-अपनी मान्यता के अनुरूप नाम व रूप देते हैं । इस कालभैरव से किसी का क्या भला होता है, इसे तो पूजने वाले ही जानें, पर एक बात निश्चित है कि इन स्वयंभू देवी-देवताओं के स्वयंभू ऐजेंटों की पाँचों उँगलियाँ हर घड़ी घी में रहती हैं । वे मनोकामना पूरी कराने अथवा गरीबी दूर करने-कराने के बहाने हर स्थिति में अपनी एजेंटी का धंधा बढ़ाते चलते रहे हैं ।

विचारणीय यह है कि क्या सिद्धांत-रहित उपहार, मनुहार का लालची और किसी भी चाटुकार की सही-गलत मनोकामनाएँ पूरी करने वाला कोई परमेश्वर हो भी सकता है क्या ? इस संदर्भ में किसी भी दृष्टिकोण से विचार करने पर उत्तर नहीं में ही देना पड़ता है; क्योंकि यह सिलसिला यदि चल पड़े तो रही-बची विवेकशीलता और न्यायनिष्ठा के परखचे ही उड़ जाएँगे ।

ऐसे कबायली परमेश्वर को पूजने वाले ही मनोकामनाएँ पूरी न होने पर उसे सौ गुनी गाली भी देते देखे गए हैं, जो कि आशाएँ लगाए रहने से पूर्व मिन्नतें करने और चमचागिरी दिखाने में अतिवाद की सीमा तक पहुँच जाते हैं । इस भ्रांत मान्यताओं वाले जंजाल को ही यदि परमेश्वर माना जाए तो फिर इसी के साथ एक बात और भी जान लेनी चाहिए कि इसके पीछे वास्तविकता कुछ भी न होने से लाभ कुछ भी नहीं होने वाला है । अंधे के हाथों कभी बटेर लग जाए तो बात दूसरी है, पर उससे भ्रांति पर आधारित मान्यता की पुष्टि नहीं होती ।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

www.akhandjyoti.org | www.awgp.org

मन से टंट-घंट करते थे, उसमें भी कमी आ सकती है । भक्तिवाद की आड़ में यह मिथ्या भ्रम-जंजाल चलाते रहने वाले को तो अपने व्यवसाय में घाटा दीख पड़ते ही अनख होने में ऐसी स्थिति भी आ सकती है जो प्रतिपक्ष पर किसी भी स्तर का आक्रोश लेकर पिल पड़े, पर सही अध्यात्म की स्थापना करने के लिए यह भी सहना पड़े तो उद्यत रहना चाहिए ।

दैवी सत्ता की सुनियोजित विधि-व्यवस्था

भ्रांतियों का स्वरूप समझ लेने के उपरांत यह भी आवश्यक है कि उसका समाधान भी समझा जाए और यह जानने का प्रयत्न किया जाए कि वह वास्तविकता क्या है, जिसकी आड़ लेकर धुएँ का बादल बनाकर खड़ा कर दिया गया ।

समझा जाना चाहिए कि संसार के दृश्यमान जड़-पदार्थों के साथ-साथ ऐसी एक सर्वव्यापी नियामक सत्ता भी है, जो इस आश्चर्य भरे ब्रह्मांड को बनाने से लेकर और भी न जाने क्या-क्या बनाती रहती है ।

असल की नकल इन दिनों खूब चल पड़ी है । नकली चीजें सस्ती भी होती हैं । चलती भी अधिक हैं और बिक्री भी उन्हीं की अधिक होती देखी जाती है । नकली सोने के, नकली चाँदी के जेवरों की दुकानों में भरमार देखी जाती है । नकली हीरे-मोती भी खूब बिकते हैं । नकली रेशम, नकली दाँत अधिक चमकते हैं । नकली घी से दुकानें पटी पड़ी हैं । नकली शहद सस्ते भाव में कहीं भी मिल सकता है, पर वह वस्तुएँ ऐसे चमकीली होते हुए भी असली जैसा सम्मान नहीं पातीं । बेचने पर कीमत भी नहीं उठती । अध्यात्म का नकलीपन भी बहुत प्रचलित हुआ है । उसे उपहार-मनुहार की टंट-घंट पूरी करके उन लाभों को पाने की प्रतीक्षा की जाने लगती है, जिनके लिए प्रबल पुरुषार्थ

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

www.akhandjyoti.org | www.awgp.org

न चुकाने पर कोई कीमती वस्तु ऐसे ही तिकड़मबाजी के सहारे हाथ कैसे लगे ? देखा जाता है कि मनोकामनाओं का पुलंदा बाँधे फिरने वाले जिस-तिस देवी-देवता के पीछे गिड़गिड़ाते फिरने के उपरांत भी खाली हाथ लौटते हैं और विधि-विधान में कोई गलती रहने या पूजा-पाठ को व्यर्थ बताने की नास्तिकों जैसी प्रतिक्रिया व्यक्त करते रहते हैं । आए दिन लाभ मिलते रहने की बात न बनते देखकर उस प्रक्रिया को छोड़ बैठते हैं या जब-तब अनमने मन से लकीर पीट लेते हैं ।

अच्छा होता अध्यात्म का दर्शन, स्वरूप, उद्देश्य और प्रयोग के संबंध में गहराई में उतरकर जानने का प्रयत्न किया गया होता और पूरा मूल्य देकर असली चीज पाने की मान्यता को बनाया गया होता । तब इस संदर्भ में किसी को कोई शिकायत करने की आवश्यकता न पड़ती ।

कहा जा चुका है कि विश्व के शक्ति-भंडार में सर्वोपरि आत्मबल है । उसकी तुलना धनबल, बुद्धिबल, शस्त्रबल, सत्ताबल आदि से नहीं हो सकती । वे सभी छोटे और बौने पड़ते हैं । जो कार्य आत्मबल संपन्न कर सके, वे दूसरों से नहीं बन पड़े । पुरुषार्थ का अपना प्रयोजन तो है, पर यदि उसके पीछे आत्मबल का समावेश न हो तो फिर समझना चाहिए कि वह फुलझड़ी की तरह तमाशा मात्र बनकर रह जाएगा । असुरों में से अनेकों ने साधनाबल के सहारे कई प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त कीं, पर वे न तो अधिक समय टिकीं और न अंततः सुखद परिणाम ही प्रस्तुत कर सकीं । भस्मासुर, महिषासुर, वृत्रासुर, रावण आदि की सिद्धियाँ अंततः उनके और उनके संबंधियों के लिए विनाश और विपत्ति का कारण ही बनीं । इसके विपरीत उस दिशा में उद्देश्यपूर्ण कदम बढ़ाने वाले स्वल्प साधनों में भी उच्चस्तरीय एवं प्रशंसनीय सफलता प्राप्त कर सके ।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

दयानंद आदि की साधनाएँ जहाँ उन्हें मनस्वी बना सकीं, वहीं उनके कर्तृत्व ने समाज का असाधारण हितसाधन किया । ऋषियों की समस्त शृंखला उसी प्रकार की है । वे स्वयं तो आकाश में नक्षत्रों की तरह अभी भी चमकते हैं, साथ ही उनके समय में उनके साथ जो भी रहे, वे भी सत्संगजन्य लाभों से निहाल होकर रहे और उच्चकोटि के अनुदान-वरदान प्राप्त करके कृत-कृत्य हो सके ।

भगवान् के अनुग्रह से कितने छोटे-छोटे असाधारण श्रेय-साधन से संपन्न हुए हैं । हनुमान, अंगद, नल-नील, जामवंत, भगीरथ, प्रह्लाद, सुदामा, विभीषण आदि की सफलताएँ ऐसी ही हैं, जिन्हें वे अपने निजी पुरुषार्थ से प्राप्त नहीं कर सकते थे । मनुष्य के अपने पुरुषार्थ की भी महत्ता है, पर उसके साथ यदि दैवी अनुग्रह के रूप में आत्मबल भी सम्मिलित हो जाता है तो फिर सोने में सुगंध के सम्मिश्रण जैसी बात बन जाती है । महाप्रभु ईसा का जीवन उदाहरण के लिए सामने है । कुंती, सावित्री, द्रौपदी, सुकन्या, अरुंधती आदि महिलाओं ने भी अपनी सांसारिक योग्यता की तुलना में आत्मिक विभूतियों के सहारे कहीं अधिक पाया था ।

इक्कीसवीं सदी में मानवीय पुरुषार्थ की आवश्यकता तो बहुत पड़ेगी । सतयुग की तरह साधु, ब्राह्मण, वानप्रस्थी, परिव्राजकों की तरह असंख्यों को आत्मोत्कर्ष की सेवा-साधनाओं में भी अपने को खपाना पड़ेगा, किंतु यह नहीं समझा जाना चाहिए कि इतना बड़ा काम मात्र मानवीय भागदौड़ से पूरा हो जाएगा । जब अपने छोटे-से कुटुंब के थोड़े-से दायरे में वाद-विवाद, मनोमालिन्य व लोकव्यवहार के झगड़े काबू में नहीं आ पाते, तो ६०० करोड़ मनुष्यों में से प्रत्येक के पीछे लगी हुई [illegible] थोड़े से व्यक्ति थोड़ी-सी योजनाएँ

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

बनाकर हलके-फुलके व्यक्तियों के सहारे उसे पूरा कर सकेंगे, यह आशा कैसे की जा सकती है । इतने प्रबल पुरुषार्थ और समाधान के पीछे दैवी शक्ति का समावेश भी होना चाहिए अन्यथा मानवीय पुरुषार्थ अपनी भूलों, कमजोरियों एवं प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण ही सफलता के स्थान पर असफलता प्राप्त करते देखे गए हैं ।

आत्मबल से उभरी परिष्कृत प्रतिभा

अध्यात्मबल का संपादन कठिन नहीं वरन् सरल है । उसके लिए आत्मशोधन एवं लोकमंगल के क्रियाकलापों को जीवनचर्या का अंग बना लेने भर से काम चलता है । व्यक्तित्व में पैनापन और प्रखरता का समावेश इन्हीं दो आधारों पर बन पड़ता है । यह बन पड़े तो दैवी अनुग्रह अनायास बरसता है और आत्मबल अपने भीतर से ही प्रचुर परिमाण में उभर पड़ता है । केवट, शबरी, गिलहरी, रीछ-वानर, ग्वाल-बाल जैसों की भौतिक सामर्थ्य स्वल्प थी, पर वे अपने में देवत्व की मात्रा बढ़ा लेने पर ही इतने मनस्वी बन सके, जिनकी चर्चा इतिहासकार आए दिन करते रहते हैं । सुग्रीव की विजय के पीछे उसकी निज की बलिष्ठता मात्र ही कारण नहीं हुई थी । नरसी मेहता ने अभीष्ट धन अपने व्यवसाय से नहीं कमाया था । अमृतसर का स्वर्णमंदिर किसी एक धनवान की कृति नहीं है । इनके पीछे देवत्व का अदृश्य सहयोग भी सम्मिलित रहा है । ध्रुव को ब्रह्मांड के केंद्र बनने का श्रेय उसके तपोबल के सहारे ही संभव हुआ था । अगस्त्य का समुद्रपान और परशुराम द्वारा अपने कुल्हाड़े के बल पर लाखों-करोड़ों का जो 'ब्रेन वाशिंग' हुआ था, उसे किन्हीं वक्ताओं के धर्मोपदेश से कम नहीं कहा जा सकता ।

सतयुग, ऋषियुग का ही प्रकट रूप है । असुरता की अभिवृद्धि

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

www.akhandjyoti.org | www.awgp.org

पौरुष जब कार्यक्षेत्र में उतरता है तो न केवल कुछ व्यक्तियों व कुछ प्रतिभाओं को वरन् समूचे वातावरण को ही उलट-पुलट कर रख देता है । धोबी की भट्ठी पर चढ़ने से मैले कपड़ों को सफाई से चमचमाते देखा गया है । भट्ठी में तपने के बाद मिट्टी मिला बेकार लोहा फौलाद स्तर का बनता और उसके द्वारा कुछ-न-कुछ कर दिखाने वाले यंत्र उपकरण बनते हैं । आत्मशक्ति की प्रखरता को इसी स्तर का बताया और पाया गया है ।

इक्कीसवीं सदी से प्रारंभ होने वाला युग-अभियान संपन्न तो प्रतिभावान् मनुष्यों द्वारा ही होगा, पर उनके पीछे निश्चित रूप से ऐसी दिव्यचेतना जुड़ी हुई होगी, जैसी कि फ्रांस की एक कुमारी जोन ऑफ आर्क ने रणकौशल से अपरिचित होते हुए भी अपने देश को पराधीनता के पाश से मुक्त कराने में सफलता प्राप्त की थी । महात्मा गाँधी और संत बिनोवा जी जो कर सके, वह उस स्थिति में कदाचित् ही बन पड़ता जो वे बैरिस्टर, मिनिस्टर, नेता, अभिनेता आदि बनकर कर सके होते ।

चंद्रगुप्त जब विश्वविजय की योजना सुनकर सकपकाने लगा तो चाणक्य ने कहा—"तुम्हारी दासी पुत्र वाली मनोदशा को मैं जानता हूँ । उससे ऊपर उठो और चाणक्य के वरद् पुत्र जैसी भूमिका निभाओ । विजय प्राप्त कराने की जिम्मेदारी तुम्हारी नहीं, मेरी है ।" शिवाजी जब अपने सैन्यबल को देखते हुए असमंजस में थे कि इतनी बड़ी लड़ाई कैसे लड़ी जा सकेगी, तो समर्थ रामदास ने उन्हें भवानी के हाथों अक्षय तलवार दिलाई थी और कहा था—तुम छत्रपति हो गए, पराजय की बात ही मत सोचो । राम-लक्ष्मण को विश्वामित्र यज्ञ की रक्षा के बहाने बला और अतिबला का कौशल सिखाने ले गए थे; ताकि वे युद्ध लड़ सकें—असुरता का समापन और रामराज्य के रूप में 'सतयुग की वापसी'

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

www.akhandjyoti.org | www.awgp.org

गया था और कहने लगा था कि "मैं अपने गुजारे के लिए तो कुछ भी कर लूँगा, फिर हे केशव! आप इस घोर युद्ध में मुझे नियोजित क्यों कर रहे हैं ?" इसके उत्तर में भगवान् ने एक ही बात कही थी कि "इन कौरवों को तो मैंने पहले से ही मारकर रख दिया है । तुझे यदि श्रेय लेना है तो आगे आ अन्यथा तेरे सहयोग के बिना भी वह सब हो जाएगा, जो होने वाला है । घाटे में तू ही रहेगा—श्रेय गँवा बैठेगा और उस गौरव से भी वंचित रहेगा जो विजेता और राज्यसिंहासन के रूप में मिला करता है ।" अर्जुन ने वस्तुस्थिति समझी और कहने लगा—"करिष्ये वचनं तव" अर्थात् आपका आदेश मानूँगा । ऐसी ही हिचकिचाहट हनुमान, अंगद, नल-नील आदि की रही होती तो वे अपनी निजी शक्ति के बल पर किसी प्रकार जीवित तो रहते, पर उस अक्षय कीर्त्ति से वंचित ही बने रहते, जो उन्हें अनंतकाल तक मिलने वाली है । युगसृजन में श्रेय किन्हीं को भी मिले, पर उसके पीछे वास्तविक शक्ति उस ईश्वरीय सत्ता की ही होगी, जिसने नई सृष्टि रचने जैसे स्तर की अभिनव योजना बनाई है और उसके लिए आवश्यक साधनों एवं अवसर विनिर्मित करने का साधन जुटाने वाला संकल्प किया है ।

मानवीय पुरुषार्थ एवं दैवी शक्ति का युग्म

कठिनाइयों को निरस्त करने वाला साहस अपने आप में ईश्वरीय अनुग्रह है । राजनीतिक, सामाजिक एवं बौद्धिक क्रांतिकारियों की सफलताएँ उनके साहस के साथ जुड़ी हैं । दुस्साहसियों में नेपोलियन जैसे मनुष्यों की गणना प्रायः होती रहती है । इंग्लैंड के ऊपर जब जर्मनी की बेतहाशा बमवारी हो रही थी और उस देश के पराजित होने का अंदेशा नागरिकों के मन पर बुरी तरह छाया हुआ था तो तत्कालीन प्रधानमंत्री ने एक नारा दिया था—'वी' फॉर विक्ट्री । यह नारा घर-घर

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

www.akhandjyoti.org | www.awgp.org

गया कि जीतेगा अंततः इंग्लैंड ही । इन दोनों बातों से जनजीवन में नया मनोबल उभरा और उसके सहारे उभरते पराक्रम ने इंग्लैंड की हारती बाजी को जिताकर दिखाया । दुष्प्रयोजनों के लिए तो लुटेरे-हत्यारे भी साहस दिखाते रहते हैं, पर ऊँचे उद्देश्यों के लिए जब भी साहस उभरता है, तब उसके पीछे साधनों की कमी होते हुए भी मनोबल का ऐसा प्रचंड प्रवाह उभरता है, जिसके सहारे पराजय विजय में बदल जाती है । ऐसा सत्साहस प्रायः दैवी ही होता है । क्षुद्रस्तर के प्राणी तो स्वार्थसिद्धि की लड़ाई ही लड़ते देखे गए हैं । मुहल्लों में कुत्तों जैसी लड़ाई होती तो कहीं भी देखी जाती है ।

अगले दिनों प्रतिभाओं को युगपरिवर्तन के लिए ऐसा कुछ पराक्रम करना पड़ेगा, जिसे अभूतपूर्व और ऐतिहासिक कहा जा सके; क्योंकि इतने व्यापक क्षेत्र में इतने बड़े और इतने कष्टसाध्य परिवर्तन प्रस्तुत करने का अवसर कदाचित् पृथ्वी पर पहली बार ही मिला है । राजाओं और सामंतों की सेना अपने साधनों के बल पर लड़कर हारती और जीतती रही है, पर ऐसा प्रथम अवसर है, जब अधिकांश राजा-प्रजा का विकृत चिंतन और चरित्र नए सिरे से अभ्यास से पूर्व ही उत्कृष्टता की दिशा में ढाला गया है और उसके लिए वरिष्ठ प्रतिभाओं को आगे बढ़कर बुद्ध के धर्म-चक्र-प्रवर्तन जैसी भूमिका निभाने के लिए सामूहिक रूप से समुद्यत होना पड़ेगा । इसके लिए दैवी अनुदान आवश्यक है । यदि वह न बन पड़े तो मौसम की प्रतिकूलता की बड़ी सैन्यसज्जा को आगे बढ़ने से रोक देती है । फिर इतने बड़े अभियान में तो साधन-रहित वर्ग के लिए छोटी-छोटी कठिनाइयाँ ही प्रगति का पथ अवरुद्ध कर सकती हैं; उलटे संकट खड़े कर सकती हैं । पीछे की हवा हो तो पैदल अथवा वाहन सरलतापूर्वक तेज दौड़ लेते हैं, जबकि सामने की तेज हवा का दबाव पथ

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

पात्रता से दैवी अनुग्रह की प्राप्ति

नवसृजन के इस विश्वमानव के भाग्य-भविष्य को नए सिरे से लिखने वाले सुयोग में दैवी शक्ति का निश्चित रूप से बड़ा योगदान रहेगा । इसके लिए किसी को किसी से कुछ माँगने की, आग्रह या अनुरोध करने की आवश्यकता नहीं है । अपनी पात्रता अनुरूप बना लेने पर सब कुछ अनायास ही खिंचता चला आता है । वर्षाकाल में खुले में रखा बर्तन अनायास ही भर जाता है, पर छोटी कटोरी हो तो उसमें उतना ही कम पानी दीखेगा, जबकि बड़ी बालटी पूरी तरह भरी हुई मिलेगी । यह पात्रता का ही चमत्कार है । गहरे सरोवर लबालब भर जाते हैं, जबकि ऊँचे टीलों पर पानी की कुछ बूँदें भी नहीं टिकतीं । वर्षा में उपजाऊ जमीन हरियाली से लद जाती है, पर ऊसर बंजर ज्यों- के-त्यों वीरान पड़े रहते हैं । नदियाँ चूँकि समतल की अपेक्षा गहरी होती हैं, इसलिए चारों ओर का पानी सिमटकर उनमें भरने और बहने लगता है । यह पात्रता ही है, जिसके अनुसार छात्रवृत्ति, प्रतिस्पर्धा, पुरस्कार आदि उपलब्ध होते हैं । यह लाभ मात्र चापलूसी करने भर से किसी को नहीं मिलते । कोई अफसर रिश्वत या खुशामद से प्रसन्न होकर किसी को यदि अनुचित पद या उपहार प्रदान कर दे तो उसकी न्यायनिष्ठा पर कर्त्तव्यपालन की जिम्मेदारी पूरी न करने का आक्षेप लगता है और उस कारण उसकी खिंचाई होती है । यह नियम शाश्वत है, इसलिए भगवान् पर भी लागू होता है और उनके भगवान् पर भी ।

पात्रता अर्जित कर लेने पर बिना किसी अतिरिक्त कोशिश-सिफारिश के, अपनी योग्यता के अनुरूप पद प्राप्त कर लिए जाते हैं, इसलिए दैवी शक्तियों के अवतरण के लिए पहली शर्त है—साधक की

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

www.akhandjyoti.org | www.awgp.org

है; क्योंकि विवाह योग्य हो जाने पर अभिभावक उपयुक्त जोड़ा तलाश करने के लिए काफी भाग-दौड़ करते हैं, किंतु कोई कुपात्र पड़ोस में बसता हो, तो भी उसकी ओर से मुँह फेर लेते हैं—खुशामद-सिफारिश और संदेश पहुँचने पर भी ध्यान नहीं देते । आध्यात्मिक सिद्धियाँ ईश्वर की पुत्रियाँ हैं । उन्हें प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को सर्वांग सुंदर होना चाहिए—भीतर से भी और बाहर से भी । यही पात्रता की परिभाषा है ।

उदारता जन्मदात्री है प्रामाणिकता की

दूसरा सद्गुण जो इतना ही आवश्यक है, वह है—'उदारता' । जिसके अंतराल में करुणा, ममता, सेवा-सहायता की कोमलता है, वही दूसरों को भी निष्ठुरता से विरत कर सकता है, करुणाकर बना सकता है । ईश्वर की अनुकंपा उन्हें मिलती है, जो दूसरों पर अनुकंपा करने में रुचि रखते हैं । निष्ठुरों की कठोरता और संकीर्ण स्वार्थपरता देखकर पड़ोसियों से लेकर भगवान् तक की अनुकंपा वापस लौट जाती है । असुरों की निष्ठुरता और अनैतिकता प्रसिद्ध है, इसलिए उनका अंत भी अन्यत्र से दौड़ पड़ने वाली निष्ठुरता के द्वारा ही होता है । असुरों के वध की कथाएँ प्रायः इसी तथ्य से सनी हुई मिलती हैं ।

पूजा-पाठ का उद्देश्य आत्म-परिष्कार और सत्प्रवृत्ति-संवर्द्धन की उदारता जगाना भर है । यदि भाव-कृत्यों से ये दोनों उद्देश्य सध रहे हों तो समझना चाहिए कि उनका समुचित लाभ मिलेगा, किंतु यदि क्रिया मात्र चल रही हो और सद्भावनाओं के विकास-परिष्कार पर उनका कोई प्रभाव न पड़ रहा हो तो समझना चाहिए कि क्रियाकलापों की

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

ही कुछ विडंबना बन पड़ेगी । इन दिनों प्रायः ऐसा ही खेल-खिलवाड़ चलता रहा है और लोग देवी-देवताओं की हजामत बनाने के लिए चित्र-विचित्र स्वांग रचते रहते और बड़ी मनोकामनाओं की पूर्ति की प्रतीक्षा करते रहे हैं । देवता उतने मूर्ख हैं नहीं, जितने कि समझे जाते हैं । हेय स्तर का व्यक्ति ही छोटे-मोटे उपहारों या कथन-श्रवणों से भरमाया जा सकता है, पर देवता तो वास्तविकता परखने में प्रवीण होते हैं; साथ ही इतने दरिद्र भी नहीं हैं कि छोटे-छोटे उपहारों के लिए आँखें मूँदकर दौड़ पड़ें; जो माँगा गया है, उसे मुफ्त में ही बाँटते-बखेरते रहें । यही कारण है कि मनौती मनाने के लिए पूजा-पत्री का सरंजाम जुटाने वालों में से अधिकांश को निराश रहना पड़ता है । आरंभ में जो लॉटरी खुलने जैसा उत्साह होता है, वह परीक्षा की कसौटी पर कसे जाने पर निरर्थक ही सिद्ध होता है । आस्तिकता के प्रति उपेक्षा-आशंका का भाव बढ़ते जाने का एक बड़ा कारण यह भी है कि लोग कम कीमत में बहुमूल्य वस्तुएँ पाने की आशा लगाने लगते हैं और जब वह विसंगति गलत सिद्ध होती है तो कभी साधना को, कभी देवता को और कभी अपने भाग्य को दोष देते हुए भविष्य के लिए एक प्रकार से अनास्थावान ही बन जाते हैं ।

हमें तथ्यों को समझना चाहिए । प्रामाणिकता की परख होने पर ही कोई बड़े काम, दायित्व या अधिकार सौंपे जाते हैं । ईश्वर के दरबार में भी यही नियम है । वहाँ साधना का अर्थ जीवनचर्या के हर पक्ष में आदर्शवादिता और प्रामाणिकता का समावेश लगाया जाता है । जो भी इस कसौटी पर खरा उतरता है, उसको हर स्वर्णकार की तरह सम्मानपूर्वक उचित मूल्य मिलता है, पर पीतल को सोना बनाकर बेचने की फिराक

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

www.akhandjyoti.org | www.awgp.org

छोटे बच्चे को खड़ा होने और धीरे-धीरे चलने में सहारा देने के लिए तीन पहिए की हाथगाड़ी बना दी जाती है । बच्चे को खड़ा तो अपने ही पैरों पर होना पड़ता है, पर उस गाड़ी की सहायता मिलने से कार्य सरल हो जाता है । ठीक इसी प्रकार पूजा-अर्चा मनुष्य के व्यक्तित्व को प्रामाणिक बनाने भर के लिए की जानी चाहिए अन्यथा भीतर घटियापन छाया रहने पर यह भी कहा जा सकता है कि साधना का सटीक अर्थ न समझा गया—उसे सही रीति से संपन्न न किया जा सका ।

उदारमना होना भी ईश्वर-भक्ति का अविच्छिन्न अंग है । कृपणता, निष्ठुरता एवं संकीर्ण स्वार्थपरता उसके रहते टिक ही नहीं सकती । संत, भक्तजन, इसीलिए अमीर नहीं रहते कि वे उपलब्धियों का न्यूनतम उपयोग करके जो बचत संभव हो. उसे प्रसन्नतापूर्वक परमार्थ-प्रयोजनों में लगाते रहे । यह उदारता ही उनमें दैवी उदारता का आह्वान करती और उसे घसीटकर बड़ी मात्रा में सामने ले आती है । बादल उदारतापूर्वक बरसते रहते हैं । समुद्र उनके भंडार को खाली न होने देने की प्रतिज्ञा निभाते रहते हैं । नदियाँ भूमि पर प्राणियों की प्यास बुझाती हैं । उनमें जल कम न पड़ने पाए, इसकी जिम्मेदारी हिमालय पर पिघलती रहने वाली बरफ उठाती है । पेड़ बिना मूल्य फल देते रहते हैं, बदले में नई फसल पर उन्हें उतने ही नए फल बिना मूल्य मिल जाते हैं । गाय दूध देती है । इससे उसका थन खाली नहीं हो जाता; सबेरे खाली हो गया थन शाम तक फिर उतने ही दूध से भर जाता है । धरती बार-बार अन्न उपजाती है । उसकी उर्वरता अनादिकाल से बनी हुई है और अनंतकाल तक अक्षुण्ण बनी रहेगी । उदार सेवा-भावना का जिसके चिंतन और व्यवहार में जितना पुट है, समझना चाहिए कि उस प्रामाणिक व्यक्ति को समाज का सम्मान भरा सहयोग और ईश्वर का अनुदान उसी

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

जीवन-साधना एवं ईश-उपासना

आस्तिकता या आध्यात्मिकता का क्रियापक्ष भी अपने स्थान पर उचित है । उससे अभीष्ट प्रयोजन के सधने में सुविधा भी रहती है और सरलता भी होती है, पर किसी को यह अनुमान नहीं लगा लेना चाहिए कि पूजा-कृत्यों की प्रक्रिया पूरी करने भर से आध्यात्मिकता के साथ जुड़ी रहने वाली फलश्रुतियों और विभूतियों की प्राप्ति भी हो जाती है । यह तो संकेत 'सिंबल' मात्र है, जो दिशा-निर्धारण करता है और मील के पत्थर की तरह बताता है कि अपनी दिशाधारा किस ओर होनी चाहिए ।

साधना का प्रयोजन है—जीवन-साधना अर्थात् अपने साथ कड़ाई और दूसरों के साथ उदारता बरतना । कड़ाई का तात्पर्य है—संयम-अनुशासन का कठोरतापूर्वक परिपालन । इंद्रिय-संयम, अर्थ-संयम और विचार-संयम ही साधना के तीन चरण हैं । इन्हीं को तत्परता के नाम से जाना जाता है । इस प्रयोजन के लिए अपव्यय को कठोरतापूर्वक रोकना पड़ता है और जो समय, श्रम, चिंतन, साधन आदि बचाया जा सकता है, उसे तत्परतापूर्वक रोका जाता है और साथ ही इसका भी ध्यान रखना पड़ता है कि उसका सत्प्रयोजनों में श्रेष्ठतम सदुपयोग किस प्रकार बन पड़े ? यदि यह निभ सके तो समझना चाहिए कि वास्तविक संयम-साधना की तपश्चर्या सही दिशा में सही रीति से चल रही है और उसका सदुपयोग भी उच्चस्तरीय प्रतिफल प्रदान करके रहेगा ।

पूजा-अर्चा प्रतीक मात्र है, जो बताती है कि वास्तविक उपासक का स्वरूप क्या होना चाहिए और उसके साथ क्या उद्देश्य और क्या उपक्रम जुड़ा रहना चाहिए । देवता के सम्मुख दीपक जलाने का तात्पर्य यहाँ दीपक की तरह जलने और सर्वसाधारण के लिए प्रकाश प्रदान करने

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

www.akhandjyoti.org | www.awgp.org

जीवन-क्रम को सर्वांग सुंदर, कोमल व सुशोभित रखने में कोई कमी न रहने दी जाए । अक्षत चढाने का तात्पर्य है कि हमारे कार्य का एक नियमित अंशदान परमार्थ-प्रयोजन के लिए लगता रहेगा । चंदन-लेपन का तात्पर्य यह है कि संपर्क क्षेत्र में अपनी विशिष्टता सुगंध बनकर अधिक विकसित हो । नैवेद्य चढ़ाने का तात्पर्य है—अपने स्वभाव और व्यवहार में मधुरता का अधिकाधिक समावेश करना । जप का उद्देश्य है—अपने मनःक्षेत्र में निर्धारित प्रकाश परिपूर्णता का समावेश करने के लिए उसकी रट लगाए रहना । ध्यान का अर्थ है—अपनी मानसिकता को लक्ष्य-विशेष पर अविचल भाव से केंद्रीभूत किए रहना । प्राणायाम का प्रयोजन है—अपने आपको हर दृष्टि से प्राणवान्, प्रखर व प्रतिभासंपन्न बनाए रहना । समूचे साधना विज्ञान का तत्त्वदर्शन इस बात पर केंद्रीभूत है कि जीवनचर्या का बहिरंग और अंतरंग-पक्ष निरंतर मानवीय गरिमा के उपयुक्त साँचे में ढलता रहे—कषाय-कल्मषों के दोष-दुर्गुण जहाँ भी छिपे हुए हों, उनका निराकरण होता चले । मनुष्य जितना ही निर्मल होता है, उसे उसी तत्परता के साथ आत्मा के दर्पण में ईश्वर की झाँकी होने लगती है । इसी को प्रसुप्ति का जागरण में परिवर्तित होना कहते हैं । आत्मज्ञान की उपलब्धि या आत्म-साक्षात्कार यही है । इस दिशा में जो जितना बढ़ पाते हैं, उन्हें उसी स्तर का सुविकसित सिद्धपुरुष या महामानव समझा जाता है ।

सड़क चलने में सहायता तो करती है, पर उसे पार करने के लिए पैरों का पुरुषार्थ ही काम देता है । भजन-पूजन तो एक प्रकार का जल-स्नान है, जिससे शरीर पर जमी हुई मलीनता दूर होती है । यह आवश्यक होते हुए भी समग्र नहीं है । जीवन धारण किए रहने के लिए तो

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

www.akhandjyoti.org | www.awgp.org

महत्त्व समझा जाए, उसे नियमित रूप से अपनाया भी जाए, किंतु यह मान बैठने की भूल न की जाए कि आत्मिक प्रगति में पात्रता और प्रामाणिकता की उपेक्षा की जाने लगे या मान लिया जाए कि क्रिया-कृत्यों से ही अध्यात्म का समस्त प्रयोजन पूरा हो जाएगा। यदि वरिष्ठता और महत्ता की जाँच-पड़ताल करनी हो तो एक ही बात खोजनी चाहिए कि व्यक्ति सामान्यजनों की अपेक्षा अपने व्यक्तित्व, चिंतन, चरित्र और व्यवहार में उत्कृष्टता का अधिक समावेश कर सका या नहीं ? सोने को कसौटी पर कसने के अतिरिक्त आग में भी तपाया जाता है, तब पता चलता है कि उसके खरेपन में कहीं कोई कमी तो नहीं है। इसी प्रकार देखा यह भी जाना चाहिए कि सत्प्रवृत्ति-संवर्द्धन जैसे लोकमंगल-कार्यों में किसका कितना बढ़ा-चढ़ा अनुदान रहा। अद्यावधि संसार के इतिहास में महामानवों तथा ईश्वर-भक्तों का इतिहास इन्हीं दो विशेषताओं से जुड़ा हुआ रहा है। इनने इन्हीं दो चरणों को क्रमबद्ध रूप से उठाते हुए उत्कृष्टता के उच्च लक्ष्य तक पहुँच सकना संभव बनाया है। अन्य किसी के लिए भी इसके अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं है। कोई ऐसा शार्टकट कहाँ है, जिसे पकड़कर जीवन के स्तर को घटिया बनाए रखकर भी कोई ठोस और सार्थक प्रगति की जा सके।

चतुरता के हथकंडों में से कई ऐसे हैं तो सही, जो बाजीगरों जैसे चमत्कार दिखाकर भोले दर्शकों को अपने कुतूहलों से चमत्कृत कर देते हैं। बेईमानी से भी कभी-कभी कोई कुछ सफलता प्राप्त कर लेता है, पर इस तथ्य को भुला न दिया जाए कि बाजीगर हथेली पर सरसों जमा तो देते हैं, पर उसका तेल निकालते और लाभ मिलते किसी ने नहीं देखा। पानी के बबूले कुछ ही देर उछल-कूद करते और फिर सदा के

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

धातुओं की खदानें जहाँ कहीं होती हैं, उस क्षेत्र के अपने सजातीय कणों को धीरे-धीरे खींचती और एकत्र करती रहती हैं । उनका क्रमिक विस्तार इसी प्रकार हो जाता है । जहाँ सघन वृक्षावली होती है, वहाँ भी हरीतिमा का चुंबकत्व आकाश से बादलों को खींचकर अपने क्षेत्र में बरसने के लिए विवश किया करता है । खिले हुए फूलों पर तितलियाँ न जाने कहाँ-कहाँ से उड़-उड़कर आ जाती हैं । इसी प्रकार प्रामाणिकता और उदारता की विभूतियाँ जहाँ कहीं भी सघन हो जाती हैं वे अपने आप में एक चुंबक की भूमिका निभाती हैं और अखिलब्रह्मांड में अपनी सजातीय चेतना को आकर्षित करके अवधारण कर लेती हैं । ईश्वरीय अंश इसी प्रकार मनुष्यों की अपेक्षा निश्चित रूप से प्राणवानों में अधिक पाया जाता है । सामान्य प्राण को महाप्राण में परिवर्तित करना ही ईश्वर-उपासना का उद्देश्य है । इसी के फलित होने पर मनुष्य को मनीषी, क्षुद्र को महान् और नर को नारायण बनने का अवसर मिलता है ।

प्रखर प्रतिभा का उद्गम-स्त्रोत

जिस प्रकार कुछ भी उपार्जन करने में मनुष्य समर्थ है, उसी प्रकार उसकी इच्छा पर यह भी निर्भर है कि उसका सदुपयोग या दुरुपयोग करने लगे । कर्मफल अवश्य ही नियंता ने अपने हाथ में रखा है, फिर भी जहाँ तक कर्त्तव्य का संबंध है, वहाँ तक मनुष्य अपनी मनमरजी बरतने में स्वतंत्र है । अर्जित प्राणशक्ति के बारे में भी यही बात है । दैत्य स्तर के लोग भौतिक सामर्थ्यों की तरह आत्मिक विभूतियों का दुरुपयोग कर सकते हैं । तांत्रिक, अघोरी, कापालिक आदि ऐसे ही उद्धत प्रयोग करते रहे हैं ।

प्राणशक्ति का भौतिक लाभ के लिए भी प्रयोग किया जा सकता

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

लिए अपने उपयुक्त वातावरण बनाते और व्यवहारकुशलता का परिचय देते हुए अभीष्ट क्षेत्र की प्रगति अर्जित करते हैं । धनवान्, बलवान्, विद्वान् व कलाकार स्तर के लोग अपनी तत्परता, तन्मयता, कुशलता और जागरूकता के सहारे अपनी इच्छित सफलताएँ अर्जित करते हैं; जबकि अनगढ़ स्तर के लोग किसी प्रकार अपना गुजारा भर चला पाते हैं—कई बार तो ऐसे जाल-जंजाल बुन लेते हैं, जिनके कारण उन्हें अनेकानेक विग्रहों-संकटों का सामना करना पड़ता है । असावधान और अव्यावहारिक लोग अकसर लोकव्यवहार में भी इतनी भूलें करते देखे गए हैं, जिनके कारण उनके लिए चैन से दिन गुजारना भी कठिन पड़ जाता है, सफलता और समृद्धियाँ प्राप्त कर सकना तो दूर की बात बन जाती है ।

भौतिक क्षेत्र में अपनी जीवट का सुनियोजन करने वाले आमतौर से अभीष्ट सफलता की दिशा में ही बढ़ते हैं । संपत्तिवान प्रगतिशील सफलताओं के अधिष्ठाता कहलाते हैं । कभी-कभी ऐसे लोग चालाकी भी अपनाते हैं, पर इतना तो निश्चित है कि जीवट का धनी हुए बिना कोई उस स्थिति तक नहीं पहुँच सकता, जिसे उन्नतिशील कहलाने का श्रेय मिल सके ।

अनगढ़ और पुरुषार्थी, दो स्तर के लोग आम जनता के बीच पाए जाते हैं । उन्हीं को गरीब-अमीर व सफल-असफल भी कहते हैं, किंतु इन सबसे ऊँचा एक और स्तर है, जिसे देवमानव कहकर सराहा जाता है । प्रतिभाशाली उपयुक्त सफलताएँ पाते हैं; भले ही उसका दुरुपयोग करके अपयश के भाजन ही क्यों न बनें, किंतु जिनने अपने गुण-कर्म-स्वभाव को सुनियोजित व सुसंस्कृत बना लिया है, उनके लिए आत्मिक

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

दिन-दिन समुन्नत होते जाते हैं । वस्तुतः व्यक्तित्व का परिष्कार और उदात्तीकरण ही वह योगाभ्यास है, जिसके माहात्म्य को लोक और परलोक की अभीष्ट सफलताएँ देने वाला बताया गया है । प्रखर प्रतिभा का उद्गम-स्रोत ईश्वर है, जिसे दूसरे शब्दों में सत्प्रवृत्तियों का समुच्चय भी कहा जा सकता है । मनुष्य-जीवन में वह गरिमामयी आदर्शवादिता और उत्कृष्टता के रूप में अवतरित होता है । पूजा-उपासना के समस्त कर्मकांडों का उद्देश्य इसी आंतरिक वरिष्ठता का संपादन और अभिवर्द्धन करना है ।

मशीनों में बिजली का करेंट कम मात्रा में पहुँचता है तो उनकी चाल बहुत धीमी पड़ जाती है, पर जैसे-जैसे वह विद्युत् प्रवाह बढ़ता है, वैसे-वैसे ही उन सब में तेजी, गति और शक्ति बढ़ती जाती है । चेतना का कामचलाऊ अंश तो प्राणिमात्र में रहता है, जिससे वह किसी प्रकार अपनी जीवनचर्या चलाता रह सके । यह जन्मजात है, किंतु जब कभी इसकी अतिरिक्त मात्रा की आवश्यकता पड़ती है तो वह योग और तपपरक साधना करता है । इन दोनों का तात्पर्य प्रकारांतर से प्रतिभा और सेवा-साधना में सरलता अनुभव होने की प्रवृत्ति ही समझी जा सकती है ।

योगदर्शन में अष्टांग-साधना में सर्वप्रथम यम-नियम की गणना की गई है । यह अंतरंग और बहिरंग सुव्यवस्था के ही दो रूप हैं । जिसने इस दिशा में जितनी प्रगति की, समझना चाहिए कि उसे उतनी ही आत्मिक प्रगति हस्तगत हुई और उसकी क्षमता उस स्तर की निखरी, जिसका वर्णन महामानवों में पाई जाने वाली ऋद्धि-सिद्धियों के रूप में किया जाता है । उपासनात्मक समस्त कर्मकांडों की संरचना इसी एक प्रयोजन के लिए हुई है कि व्यक्ति की पशु-प्रवृत्तियों के घटने और दैवी

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

उद्देश्य का विस्मरण कर दिया जाए और मात्र पूजापरक क्रिया-कृत्यों को ही सब कुछ मान लिया जाए तो यह चिह्नपूजा का निर्जीव उपक्रम ही माना जाएगा और उतने भर से बढ़ी-चढ़ी उपलब्धियों की आशा करने वालों को निराश ही रहना पड़ेगा ।

समर्थ पक्षियों के नेतृत्व में अनेक छोटी चिड़ियाँ उड़ान भरती हैं । बलिष्ठ मृग के परिवार में आश्रय पाने के लिए उसी जाति के अनेक प्राणी सम्मिलित होते जाते हैं । च्यूँटियाँ कतार बनाकर चलती हैं । बलिष्ठ आत्मबल के होने पर दैवी शक्तियों का अवतरण आरंभ हो जाता है और साधक क्रमशः अधिक सिद्ध स्तर का बनता जाता है । यही है वह उपलब्धि, जिसके सहारे महान् प्रयोजन सधते और ऐसे गौरवास्पद कार्य बन पड़ते हैं, जिन्हें सामान्य स्तर के लोग प्रायः असंभव ही मानते रहते हैं ।

बड़ी उपलब्धियों के लिए प्रायः दो मोरचे सँभालने पड़ते हैं—एक यह कि अपनी निजी दुर्बलताओं को घटाना-मिटाना पड़ता है । उनके रहते मनुष्य में आधी-चौथाई शक्ति ही शेष रह जाती है, अधिकांश तो निजी दुर्बलताओं के छिद्रों से होकर बह जाती है । जिनके लिए अपनी समस्याओं को सुलझाना ही कठिन पड़ता है, वह व्यापक क्षेत्र के बड़े कामों का सरंजाम किस प्रकार जुटा सकेंगे । भूखा व्यक्ति किसी भी मोरचे पर जीत नहीं पाता । इसी प्रकार दुर्गुणी व्यक्ति स्वयं अपने लिए इतनी समस्याएँ खड़ी करता रहता है, जिनके सुलझने में उपलब्ध योग्यता का अधिकांश भाग खपा देने पर भी यह निश्चय नहीं होता कि अन्य महत्त्वपूर्ण कार्य संपादित करने के लिए कुछ सामर्थ्य बचेगी या नहीं ।

बच्चों को लोरी गाकर सुला दिया जाता है । झूले पर हिलते रहने वाले बच्चे भी जल्दी सो जाते हैं । रोने वाले बच्चे को अफीम चटाकर

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

www.akhandjyoti.org | www.awgp.org

दुर्व्यसन में आलस्य-प्रमाद का आदी बनाकर ऐसा कुछ बना दिया जाता है, मानो वह अर्द्ध-मृत या अर्द्ध-विक्षिप्त, अनगढ़ स्थिति में रह रहा है । ऐसे व्यक्ति पग-पग पर भूलें करते और कुमार्ग पर चलते देखे जाते हैं । उपलब्धियों का आमतौर से ऐसे ही लोग दुरुपयोग करते और घाटा उठाते हैं, किंतु जिनने इस अनौचित्य की हानियों को समझ लिया है, उनके लिए आत्मानुशासन कठिन नहीं रहता वरन् उसके मार्ग में आने वाली कठिनाइयों को उससे कहीं अधिक हलकी अनुभव करते हैं, जो कुमार्ग पर चलने वाले को पग-पग पर उठानी पड़ती हैं । परमार्थ-कार्यों में समय और साधनों का खरच तो होता है, पर वह उतने दुष्परिणाम उत्पन्न नहीं करता जितना कि संकीर्ण स्वार्थपरता अपनाकर तत्काल दीखने वाले लाभों के व्यामोह में निरंतर पतन और पराभव ही हाथ लगता है ।

हर महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए प्रतिभाशाली व्यक्तित्व चाहिए अन्यथा असावधान एवं अनगढ़ जितना कुछ कर पाते हैं, उससे अधिक हानि करते रहते हैं । ऐसों की न कहीं आवश्यकता होती है, न इज्जत और न उपयोगिता । ऐसी दशा में उन्हें जहाँ-तहाँ ठोकरें ही खाते देखा जाता है । इसके विपरीत उन जागरूक लोगों का पुरुषार्थ है, जो पूरे मनोयोग के साथ काम को प्रतिष्ठा का प्रश्न बनाते हैं । बड़प्पन ऐसों के हिस्से में ही आता है । बड़े काम संपन्न करते ऐसे ही लोग देखे जाते हैं । बड़ाई उन्हीं के हिस्से में आती है । साधन तो सहायक भर होते हैं । वस्तुतः मनुष्य की क्षमता, और दक्षता उसके गुण-कर्म-स्वभाव के निखार पर निर्भर रहती है ।

अध्यात्म जादूगरी नहीं है और न कहीं आसमान से बरसने वाले

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

करने वालों को निहाल करते रहें और जो इनके लिए ध्यान न दे सकें, उन्हें उपेक्षित रखें या आक्रोश का भाजन बनाएँ । वस्तुतः देवत्व आत्म-जागरण की एक स्थिति विशेष है, जिसमें अपने ही प्रसुप्त वर्चस्व को प्रयत्नपूर्वक काम में लाया जाता है और सत्प्रयासों का अधिकाधिक लाभ उठाया जाता है ।

कहते हैं कि भगवान् शेषशैय्या पर सोते रहते हैं । कुसंस्कारी लोगों का भगवान् उन बचकानों की बेहूदी धमा-चौकड़ी से तंग आकर आँखें मूँदकर इसी प्रकार जान बचाता है, पर जो मनस्वी उसकी सहायता से कठिनाइयों में त्राण पाना चाहते हैं, उनके लिए द्रौपदी या गज की तरह उसकी कष्टनिवारण शक्ति भी दौड़ी आती है । जिन्हें वर्चस्व प्राप्त करना होता है, उन्हें सुदामा, नरसी, विभीषण व सुग्रीव की तरह अयाचित वैभव भी प्रचुर परिमाण में हस्तगत होता है ।

इच्छाशक्ति संसार की सबसे बड़ी सामर्थ्य है । साहस भरे संकल्प-बल से बढ़कर इस संसार में और कोई बलिष्ठ नहीं । इसी को अर्जित करते जाना जीवन का वास्तविक लक्ष्य है; क्योंकि स्वर्ग-मुक्ति जैसे आध्यात्मिक और ऋद्धि-सिद्धि जैसे भौतिक लाभ इसी आधार पर उपलब्ध किए जाते रहते हैं ।

स्वयं का भार वहन करना भी आमतौर से कठिन काम माना जाता है । फिर अनेकों का भार वहन करते हुए उन्हें ऊँचा उठाने और आगे बढ़ाने का लक्ष्य पूरा करना तो और भी अधिक कठिन पड़ना चाहिए, पर यह कठिनाई या असमर्थता तभी तक टिकती है, जब तक अपने में सामर्थ्य की कमी रहती है । उसका बाहुल्य हो तो मजबूत क्रेनें रेलगाड़ी के पटरी से उतरे डिब्बों को अंकुश में लपेटकर उलटकर सीधा करतीं [illegible] योग्य बनाकर अच्छी स्थिति में पहुँचा देती हैं ।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

इक्कीसवीं सदी में उससे कहीं अधिक पुरुषार्थ किये जाने हैं, जितना कि पिछले दो महायुद्धों की विनाश-विभीषिका में ध्वस्त हुआ है; जैसे कि वायु-प्रदूषण ने जीवन-मरण का संकट उत्पन्न किया है; विषमताओं और अनाचारजन्य विभीषिकाओं ने भी संकट उत्पन्न किए हैं । शक्ति तो इन सभी में खर्च हुई, पर ध्वंस की अपेक्षा सृजन के लिए कहीं अधिक सामर्थ्य और साधनों की आवश्यकता पड़ती है । इसका यदि संचय समय रहते किया जा सके तो समझना चाहिए कि दुष्ट चिंतन और भ्रष्ट आचरण के कारण उन असंख्य समस्याओं का समाधान संभव होगा जो इन दिनों हर किसी को उत्तेजित, विक्षुब्ध और आतंकित किए हुए हैं ।

युगपरिवर्तन प्रतिभा ही करेगी

प्रयोजन बड़ा होते हुए भी उसका समाधान सरल है । यदि प्रतिभाओं के परिष्कार का क्रम चल पड़े, उनके आविर्भाव का उपचार बन पड़े तो समझना चाहिए कि इन अनुदानों के सहारे विश्वव्यापी कार्य सध जाता है—सामाजिक और क्षेत्रीय समस्याओं को सँभालते रहना और भी अधिक सरल पड़ता जाएगा ।

हर महत्त्वपूर्ण कार्य में तद्नुरूप ऊर्जा की जरूरत पड़ती है । उसके बिना तो छोटे-छोटे कार्य भी पूरे नहीं होते । हर महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए ऊर्जा चाहिए; फिर युगनिर्माण जैसा विश्वव्यापी और अत्यधिक भारी-भरकम काम तो वरिष्ठ प्रतिभासंपन्नों के कंधा लगाए बिना पूरा हो सकने की तो कल्पना भी नहीं की जा सकती ।

नवनिर्माण की विश्वव्यापी संरचना जिसने सोची और खड़ी की है, उसने इस पुण्यप्रयोजन की पूर्ति के लिए प्राणवान् जीवट के धनी व्यक्तित्वों की अच्छी-खासी सेना खड़ी करने की आवश्यकता अनुभव की है और

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

www.akhandjyoti.org | www.awgp.org

उन्हीं के लिए है । प्रतिभा-परिष्कार का सुयोग उपयुक्त मात्रा में बन पड़ा तो फिर अपनी दुनिया का स्वरूप और परिवेश बदल डालने में नियंता के सामने और कोई बड़ी कठिनाई शेष न रहेगी ।

भूतकाल में भी मनस्वी लोगों ने एक-से-एक आश्चर्यजनक कार्य किए हैं । इनमें अगस्त्य का समुद्र सोखना, हनुमान का पर्वत उठाना एवं विश्वामित्र के तत्त्वावधान में रामराज्य की स्थापना होना जैसी घटनाएँ ऐसी हैं, जो बताती हैं कि करने-मरने पर उतारू व्यक्ति के लिए क्या कुछ ऐसा है, जिसे संभव करके नहीं दिखाया जा सकता । स्वर्ग से धरती पर गंगा उतारने वाले भगीरथ अपने कार्य में सफल हुए थे तो फिर कोई कारण नहीं कि नवनिर्माण में जुटे भगीरथों की अपनी मंडली भ्रम-जंजाल से निकलकर सीधे और सरल काम कर सकने के लिए समर्थ नहीं बन सकती ।

प्रतिभाओं का निखार दूसरे तो क्या, किसी की भी कृपा-अनुकंपा के ऊपर निर्भर नहीं है । वह तो पूरी तरह अपने बस की बात है । शरीर से इच्छानुरूप काम लिया जा सकता है । उस पर पूरा नियंत्रण अपना रहता है । जो लोग संसार के वर्तमान प्रचलनों की बातों को ही सब कुछ मानते हैं, उन्हें क्या कहा जाए अन्यथा अपने मनोबल और प्रयास को यदि दिशाबद्ध किया जा सके तो हर व्यक्ति अंतः की प्रेरणा से न जाने क्या-से-क्या कुछ करके दिखा सकता है । यह नया प्रयोग नहीं है । भूतकाल में ऐसे ही प्रयोग होते रहे हैं । युग बदलते रहे और मनुष्य अपनी प्रथा- परंपराओं में आमूलचूल परिवर्तन करता रहा है । इस बार की महाकाल द्वारा दी गई चुनौती को अस्वीकार करते न बन पड़ेगा ।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

www.akhandjyoti.org | www.awgp.org

पूर्ति का सरंजाम जुट रहा है । समय रहते वह पूरा भी होगा । यह संभावना अधूरी न रहेगी; क्योंकि प्रतिभावानों में हुंकार जब भी उठी है, उसने विशिष्ट स्तर की प्रतिभाओं को विकसित किया है । यह प्रतिभावानों की विशेषता रही है । इसके लिए शरीरबल, साधनबल, बुद्धिबल की उतनी आवश्यकता नहीं, जितनी कि गाँधी, बुद्ध, बिनोवा जैसे प्रतिभावानों की । समय स्वल्प हो तो भी अपने संपर्क-क्षेत्र में प्रतिभा का परिचय देने वाले मनस्वी तो हर किसी को उभार सकते हैं और गीध, गिलहरी, शबरी, भील जैसे चमत्कार प्रस्तुत कर सकते हैं, जो छोटों के लिए भी संभव हो सकता है ।

इक्कीसवीं सदी में आंदोलन की भागीदारी स्वीकार करने के लिए भाव-संवेदना के धनी वर्ग का आह्वान किया गया है । आरंभ की दृष्टि से हलके काम सौंपे गए हैं—युगसंधिपुरश्चरण के अंतर्गत जप, साधना, समयदान, अंशदान, साप्ताहिक सत्संग, झोला-पुस्तकालय आदि । उन्हें हलके दरजे के स्काउट व्यायाम स्तर का समझा जाए, जिससे अभिरुचि और आस्था की परिस्थिति बढ़ चले ।

अनगढ़ता मिटे, सुगढ़ता विकसित हो

पृथ्वी का उत्तर ध्रुव निखिलब्रह्मांड में संव्याप्त पदार्थ-संपदामें से अपने लिए आवश्यक तत्त्व खींचता रहता है । वही धरती की विविध आवश्यकताएँ पूरी करता है । जो निरर्थक अंश बच रहता है, वह पदार्थ ध्रुव-मार्ग से कचरे की तरह बाहर फेंक दिया जाता है । यही क्रम मनुष्य-शरीर का है । वह अपनी रुचि और प्रकृति के अनुरूप चेतन तत्त्व आकाश में से खींचता और छोड़ता रहता है । उसी पूँजी से अपना काम चलाता है । क्या ग्रहण करना और क्या बहिष्कृत करना है, यह

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

बन चुका है तो उसका आकर्षण विश्वब्रह्मांड से अपने स्तर के सहकारी तत्त्व खींचता और भंडार करता रहेगा, पर पूँजी अपने मनोबल के अनुरूप ही जमा होती रहती है । वैसे मनुष्य को जन्मजात रूप से विभूतियों का वैभव प्रचुर मात्रा में मिला है, पर वह प्रसुप्ति की तिजोरी में बंद रहता है; ताकि आवश्यकता अनुभव होने पर ही उसे प्रयत्नपूर्वक उभारा और काम में लाया जा सके । सभी जानते हैं कि भूगर्भ में विभिन्न स्तर के रासायनिक द्रव्य भरे पड़े हैं । यह भी किसी से छिपा नहीं है कि आकाश से निरंतर धरती पर प्राणतत्त्व की वर्षा होती रहती है । वनस्पतियों और प्राणियों का गुजारा इन्हीं उभयपक्षीय अनुदानों के सहारे चलता है । मानवीय व्यक्तित्व के संबंध में भी यही बात है । वह इच्छित प्रगति के लिए अपने वर्चस्व का कितना ही महत्त्वपूर्ण अंश उभार सकता है और अपने बलबूते वांछित दिशा में अग्रगमन कर सकता है । उर्वरता भूमि में होती है, पर उसके प्रकट होने के लिए ऊपर से जल बरसना भी आवश्यक है अन्यथा उर्वरता हरीतिमा का रूप धारण न कर सकेगी । मनुष्य को अपने में सन्निहित विशेषताओं को भी ऊर्ध्वगामी बनाना चाहिए और साथ ही अदृश्य जगत् के विपुल वैभव का अंश भी अपनी आकर्षण-शक्ति से खींचकर अधिकाधिक सुसंपन्न बनना चाहिए । अपने गुण-कर्म-स्वभाव को प्रखर-परिष्कृत बनाना और ईश्वर-सान्निध्य स्थापित करके व्यापक शक्ति के लिए कुछ उपयुक्त से खींच बुलाना, ये दोनों ही क्रियाएँ अपने ढंग से नियमित रूप से चलती रहें तो समझना चाहिए कि प्रगति का सुव्यवस्थित सरंजाम जुटने की समुचित व्यवस्था बन गई । इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए चिंतन, चरित्र और स्वभाव को—गुण, कर्म और भाव-संवेदना को दिनों-दिन अधिक उत्कृष्ट बनाते

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

www.akhandjyoti.org | www.awgp.org

ही आवश्यक यह भी है कि इस विराट् विश्व की कामधेनु की अनुकूलता प्राप्त करके अमृत भरे पयपान का लाभ उठाते रहा जाए ।

प्राण अपना है, प्रतिभा भी अपनी है, पर वह अनगढ़ स्थिति में झाड़-झंखाड़ों से भरी रहती है । उसे सुरम्य उद्यान में बदलने के लिए कुशल माली जैसे अनुभव और सतर्कता भरा प्रयत्न चाहिए । जो उसे कर पाते हैं, वे ही देखते हैं कि 'ईश्वर अंश जीव अनिवाशी' का प्रतिपादन सोलहों आना सच है । उसमें किसी प्रकार की अत्युक्ति नहीं है । घाटे में वे रहते हैं, जो अपनी उपेक्षा आप करते हैं । जो अपनी अवमानना अवहेलना करेगा, वह दूसरों से भी तिरस्कृत होगा और स्वयं भी घाटे में रहेगा ।

बड़े प्रयोजन के लिए प्रतिभावानों की आवश्यकता

इक्कीसवीं सदी में यों अपनी-अपनी भावना और योग्यता के अनुरूप हर किसी को कुछ-न-कुछ करना ही चाहिए । व्यस्तता और अभावग्रस्तता के कुहासे में कुछ करना-धरना सूझ न पड़ता हो तो फिर अपनी मनःस्थिति और परिस्थिति का उल्लेख करते हुए शांतिकुंज, हरिद्वार से परामर्श कर लेना चाहिए ।

विशेषतः इस शताब्दी में प्रखर प्रतिभाओं की बड़ी संख्या में आवश्यकता पड़ेगी । पिछली शताब्दी में प्रदूषण फैला, दुर्भाव बढ़ा और कुप्रचलन का विस्तार हुआ है । उसमें सामान्यजनों का कम और प्रतिभाशालियों द्वारा किए गए अनर्थ का दोष अधिक है । अब सुधार की वेला आई है तो कचरा बिखेरने वाले वर्ग को ही उसकी सफाई का प्रायश्चित्त करना चाहिए । तोड़ने वाले मजदूर सस्ते मिल जाते हैं, किंतु कलात्मक निर्माण करने के लिए अधिक कुशल कारीगर चाहिए । नव-

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

www.akhandjyoti.org | www.awgp.org

तत्परता अधिक ऊँचे स्तर की चाहिए । उनका अंतराल भी समुज्ज्वल होना चाहिए और बाह्य दृष्टि से इतना अवकाश एवं साधन भी उनके पास होना चाहिए ताकि अनावश्यक विलंब न हो और नए युग की क्षतिपूर्ति कर नवनिर्माण वे विश्वकर्मा जैसी तत्परता के साथ कर सकें; जो एकांगी न सोचें वरन् बहुमुखी आवश्यकताओं के हर पक्ष को सँभालने में अपनी दक्षता का परिचय दे सकें । यही निर्माण आज का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य है । सृजेता ही कार्य संपन्न कर दिखाता है । मूकदर्शक तो खड़े-खड़े साक्षी की तरह देखते रहते हैं । ऐसी भीड़ में असुविधा ही बढ़ती है । गंदगी और गड़बड़ी फैलाते रहना ही अनगढ़ लोगों का काम होता है ।

सृजेता की सृजन-प्रेरणा किस गति से चल रही है और उज्ज्वल भविष्य की निकटता में अब कितना विलंब है, इसकी जाँच-पड़ताल एक ही उपाय से हो सकती है कि कितनों के अंतःकरण में उस परीक्षा की घड़ी में असाधारण कौशल दिखाने की उमंगें उठ रही हैं तथा स्वार्थ की अपेक्षा परमार्थ अपनाना कितना अधिक सुदृढ़ होता चला जाता है ? समय की सबसे बड़ी आवश्यकता—नवसृजन—के लिए सोच तो कोई कुछ भी सकता है, पर क्रियारूप में कुछ कर पड़ना उन्हीं के लिए संभव हो सकता है, जो निजी महत्त्वाकांक्षाओं में कटौती करके अधिक-से-अधिक समय, श्रम, मनोयोग एवं साधनों को नियोजित कर सकें । भवन खड़ा करने के लिए ईंट, चूना, सीमेंट, लकड़ी, लोहा आदि अनिवार्य रूप से चाहिए । युगसृजन भी ऐसे ही अनेक साधनों की अपेक्षा करता है । उन्हें जुटाने के लिए पहला अनुदान अपने से ही प्रस्तुत करने वालों को ही यह आशा करनी चाहिए कि अन्य लोग भी उसका अनुकरण करेंगे;

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

www.akhandjyoti.org | www.awgp.org

कहा जा चुका है कि युगसृजन जैसा महान् उत्तरदायित्व पूरा करने में स्रष्टा की उच्चस्तरीय सृजन-शक्तियाँ ही प्रमुख भूमिका संपन्न करेंगी । मनुष्य की औसत उपलब्धि तो यही रही है कि वह बनाता कम और बिगाड़ता अधिक है, पर जहाँ बनाना-ही-बनाना एकमात्र लक्ष्य हो, वहाँ तो स्रष्टा की सृजन-सेना ही अग्रिम मोरचा सँभालती दिखाई देगी । हर सैनिक के लिए अपने ढंग का अस्त्र-शस्त्र होता है । युगसृजन में आदर्शों के प्रति सघन श्रद्धा चाहिए और ऐसी लगन, जिसे किन्हीं आकर्षण या दबाव से विचलित न किया जा सके । ऐसे व्यक्तियों को ही देवमानव कहते हैं और उन्हीं के द्वारा ऐसे कार्य कर गुजरने की आशा की जाती है । जिन तथाकथित, कुंठाग्रस्त व मायाग्रस्त लोगों को सुनने-विचारने तक की फुरसत नहीं होती, उनसे तो कुछ बन पड़ेगा ही कैसे !

ईश्वर का स्वरूप न समझने वाले उसे मात्र मनोकामनाओं की पूर्ति का ऐसा माध्यम मानते हैं, जो किसी की पात्रता देखे बिना आँखें बंद करके योजनाओं की पूर्ति करता रहता है; भले ही वे उचित हों या अनुचित, किंतु जिन्हें ब्रह्मसत्ता की वास्तविकता का ज्ञान है, वे जानते हैं कि आत्मपरिष्कार और लोककल्याण को प्रमुखता देने वाले ही ईश्वर-भक्त कहे जाने योग्य हैं । इसके बदले में अनुग्रह के रूप में सजल श्रद्धा और प्रखर प्रज्ञा के अनुदान मिलते हैं । उनकी उपस्थिति से ही पुण्य-प्रयोजन के लिए ऐसी लगन उभरती है, जिसे पूरा किए बिना चैन ही नहीं पड़ता । उस ललक के रहते वासना, तृष्णा और अहंता की मोह-निद्रा या तो पास ही नहीं फटकती या फिर आकर वापस लौट जाती है । नररत्न ऐसों को ही कहते हैं । प्रेरणाप्रद इतिहास का ऐसे ही लोग सृजन करते हैं । उनके चरणचिह्नों का अनुसरण करते हुए सामान्य

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

यदि छोटे-बड़े रूप में उभरता दीख पड़े तो अनुमान लगाना चाहिए कि भावभरा बदलाव आने ही वाला है । कोपलें निकलीं तो कलियाँ बनेंगी, फूल खिलेंगे, वातावरण शोभायमान होगा और उस स्थिति के आते भी देर न लगेगी, जिससे वृक्ष फलों से लदते और अपनी उपस्थिति का परिचय देकर हर किसी को प्रमुदित करते हैं ।

इन दिनों औसत आदमी संकीर्ण स्वार्थपरता की पूर्ति में एड़ी से चोटी तक डूबा प्रतीत होता है । उनकी आँखें न सजल होकर इर्द-गिर्द बिखरे हुए पतन-पराभव को देखती हैं और न ऐसा कुछ सूझता है कि अवांछनीयता को औचित्य में बदलने के लिए उनसे क्या कुछ बन पड़ सकता है । जिनके कानों में कराह की पुकार ही नहीं पहुँचती है; जिन्हें घुँघरू के बोल ही सुहाते हैं, वे युग की पुकार और ईश्वर की वाणी सुन सकने में किस प्रकार समर्थ हो सकते हैं ! मानवीय भाव-संवेदना जहाँ से पलायन कर जाती है और जहाँ मरघट जैसी नीरवता और नीरसता ही छाई रहती है, वहाँ शालीनता का स्नेह-सद्भाव कैसे बन पड़ेगा ! कैसे उस दिशा में उनके कुछ कदम उठ सकेंगे ! ऐसे वातावरण में यदि कोई पुण्य- परमार्थ को वरण करने की बात सोचता है तो समझना चाहिए इसी आकाश में उदीयमान नक्षत्रों की चमक प्रारंभ हुई और रात्रि को भी रत्नजड़ित चाँदनी से सजा देने वाली मंगलमयी वेला का आगमन शुरू हुआ ।

आदर्शों के प्रति श्रद्धा और कर्त्तव्य के प्रति लगन का जहाँ भी उदय हो रहा है, समझना चाहिए कि वहाँ किसी देवमानव का आविर्भाव हो रहा है । बड़े काम बड़े लोग कर पाते हैं । हाथी का वजन हाथी ही उठाता है । गधे की पीठ पर यदि उसे लाद दिया जाए तो बेचारे की

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

की परिधि में ही क्षमताओं को खपा देते हैं । उनसे यह बन नहीं पड़ता कि आदर्शों की बात सोचें, उत्कृष्टता अपनाएँ और विश्वकल्याण के क्रियाकलापों में रुचि लेकर कुछ ऐसा करें जिसकी युगधर्म ने पुकार लगाई और गुहार मचाई है ।

वर्षा आती है तो हरीतिमा अनायास ही सर्वत्र उभर पड़ती है । वसंत आता है तो हर पेड़-पौधे पर फूलों की शोभा निखरती है । समझना चाहिए कि नवसृजन की इस पुण्यवेला में तनिक-सी गरमी पाते ही मलाई दूध के ऊपर आकर तैरने लगेगी । नवयुग का चमत्कार अरुणोदय की तरह यह दृष्टिकोण उभारेगा कि लोग अपने निर्वाह के प्रति स्वल्प संतोषी दृष्टिकोण अपनाएँगे और युगधर्म की बहुमुखी आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए इस प्रकार जुट पड़ेंगे, मानो इसी एक काम के लिए उनका सृजन-अवतरण हुआ हो । अप्रत्याशित को निर्झर की तरह जमीन फोड़कर उभर पड़ना उसी को कहा जाएगा जो अगले दिनों होने जा रहा है ।

समय अपनी गति से चलता और बदलता है, पर जब कभी आकस्मिक परिवर्तन दीख पड़े तो समझना चाहिए कि वह संध्याकाल जैसा परिवर्तन-पर्व है । परिवर्तन-पर्व निकट है । उसमें बहुत कुछ बदलना है, पर बदलाव की प्रथम किरण जहाँ से दृष्टिगोचर होगी, उसे प्रखर प्रतिभाओं का अभिनव उद्भव कहा जा सकेगा । भगवान् मनुष्य के रूप में परिवर्तित होंगे और उनकी निजी गतिविधियों का परिवर्तन विश्वपरिवर्तन की भूमिका बनकर और व्यापक बनता चला जाएगा ।

योजना, प्रेरणा, दक्षता, व्यवस्था और समर्थता तो भगवान् की काम करेगी, किंतु श्रेय वे लोग प्राप्त करेंगे, जिनकी अंतरात्मा में युग के अनुरूप

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

www.akhandjyoti.org | www.awgp.org

देता है, पर उसकी बाँग को सुनकर असंख्यों को ब्रह्ममुहूर्त्त की सूचना मिलती है और वे भी अरुणोदयवेला का लाभ लेने के लिए कार्यक्षेत्र में कदम उठाते हुए अगले दिनों दृष्टिगोचर होंगे ।

सद्बुद्धि का उभार कैसे हो ?

अभावों और संकटों में से कितने ही ऐसे हैं, जिनके कारण मनुष्य को आए दिन बैचेन रहना पड़ता है । ऐसी स्थिति में वह दूसरे संपन्नों से आशा भी करता है कि उसकी कुछ मदद की जाए । करने वाला इसमें कर्त्तव्यपालन और पुण्यपरमार्थ अनुभव करता है ।

दुर्बलता, रुग्णता, दरिद्रता, शत्रुता, मूर्खता व आशंका जैसे कितने ही कारण ऐसे हैं जो दुःखों को बढ़ाते और त्रास देते रहते हैं, पर इन सबके मूल में एक ही विपत्ति सर्वोपरि है, जिसका नाम है—अदूरदर्शिता । अविवेक भी इसी को कहते हैं । दिग्भ्रांत मनुष्य अपने को समझदार मानते हुए भी कुचक्र में फँसते और भटकाव के कारण पग-पग पर ठोकरें खाते हैं । अनाचार भी इस कारण बनते हैं । गुण-कर्म-स्वभाव में निकृष्टता इसी कारण घुस पड़ती है । जड़ में से अनेक टहनियाँ, पत्तियाँ फूटती हैं, इसी प्रकार एक अविवेकशीलता का बाहुल्य रहने पर कारणवश या अकारण ही समस्याओं में उलझना और विपत्तियों में फँसना पड़ता है ।

पत्ते सींचने से पेड़ की सुव्यवस्था नहीं बन पड़ती, इसलिए जड़ में खाद-पानी लगाने और उजाड़ करने वालों से रखवाली करनी पड़ती है । इतना प्रबंध किए बिना अच्छी भूमि में बोया गया अच्छा बीज भी

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

सद्ज्ञान को समस्त विपत्तियों का निवारक माना गया है । रामायण का कथन है कि 'जहाँ सुमति तहाँ संपत्ति नाना' । अर्थात् जहाँ विचारशीलता विद्यमान रहेगी, वहाँ अनेकानेक सुविधाओं-संपदाओं की शृंखला अनायास ही खिंचती चली आएगी । यही कारण है कि सद्बुद्धि की अधिष्ठात्री गायत्री को माना गया है । मनःस्थिति परिस्थितियों का निर्माण करती है । परिस्थितियाँ ही सुख-दुःख का, उत्थान-पतन का निमित्त कारण बनकर सामने आती हैं । गीताकार ने सच ही कहा है कि मनुष्य ही अपना शत्रु है और वही चाहे तो अपने को सघन सहयोगी मित्र बना सकता है, इसलिए अपने आपको गिराना नहीं, उठाना चाहिए ।

आशा और विश्वास के बल पर कष्टसाध्य रोगों के रोगी बीमारियों से लड़ते-लड़ते देर-सबेर चंगे हो जाते हैं; जबकि शंकालु, डरपोक और अशुभ चिंतन करते रहने वाले साधारण रोगों को ही तिल का ताड़ बनाकर मौत के मुँह में जबरदस्ती जा घुसते हैं । देखा गया है कि अशुभ चिंतन के अभ्यासी अपना जीवट और साहस आधी से अधिक मात्रा में अपनी अनुपयुक्त आदतों के कारण ही गँवा बैठते हैं । कठिनाइयाँ और अड़चनें हर किसी के जीवन में आती हैं, पर उनमें से एक भी ऐसी न होगी जिसे धैर्य और साहसपूर्वक लड़ते हुए परास्त न किया जा सके । सहनशीलता एक ऐसा गुण है, जिसके साथ धैर्य भी जुड़ा होता है और साहस भी । आजीवन जेल की सजा पाए हुए कैदी भी उस विपत्ति को ध्यान में न रखकर घरेलू जैसी जिंदगी जी लेते हैं और अवधि पूरा करके वापस लौट आते हैं । सुनसान बीहड़ों में खेत या बगीचे रखाने वाले निर्भय होकर चौकीदारी करते रहते हैं; जबकि डरपोकों को घर में चुहिया की खड़बड़ भी भूत-बला के घर में घुस आने जैसी डरावनी प्रतीत होती

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

पहुँचाई जा सकने वाली हानि की कल्पना संत्रस्त करती रहती है । कुछ लोग गरीबी के रहते हुए भी हँसती-हँसाती जिंदगी जी लेते हैं; जबकि कितनों के पास पर्याप्त साधन होते हुए भी तृष्णा छाई दिखती रहती है । यह मन का खेल है । हर किसी की अपनी एक अलग दुनिया होती है, जो उसकी अपनी निज की संरचना ही होती है; परिस्थितियों और साथियों का इस निर्माण-कार्य में यत्किंचित् सहयोग ही होता है । जीवन गीली मिट्टी की भाँति है, उसे कोई जैसी भी कुछ चाहे, आकृति दे सकता है ।

निजी जीवन में आन-बान-शान पर मर मिटने वालों की लंबी कहानी है । जयचंद, मीरजाफर के उदाहरण ऐसे ही लोगों में सम्मिलित हैं । शत्रु से बदला चुकाने के नाम पर न जाने क्या-क्या अनर्थ होते रहे हैं । ईर्ष्या ने अपने प्रतिद्वंद्वियों को धूल चटाने में कमी नहीं रखी— ऐसे बहुत हैं, जो भयंकर अग्निकांड रचने की ललक में अपने को भी घास-फूस की तरह जला बैठे । युद्धों की कथा-गाथाओं के पीछे भी इन्हीं दुष्प्रवृत्तियों की भूमिका काम करती रही है । कहने को तो उन्हें भी दुस्साहस ही कह सकते हैं । अनाचारी, आतंकवादी और षड्यंत्रकारी ऐसा ही ताना-बाना बुनते रहते हैं ।

प्रश्न इन दिनों सर्वथा दूसरी प्रकार का है—सृजन और उन्नयन के लिए किसकी सद्भावना किस हद तक उभरती है ? देखा जाना है—स्वार्थ के मुकाबले में परमार्थ सुहाता किसे है ? ध्वंस करने वाले जिस प्रकार मूँछों पर ताव देते हैं और शेखी बघारते हैं, वैसा सृजनकर्मियों को नहीं सुहाता है । निर्माणकर्त्ताओं की मंद गंध चंदन जैसी होती है, जो बहुत समीप से ही सूँघी जा सकती है, पर ध्वंस की दुर्गंध तो अपने समूचे क्षेत्र को ही दुर्गंधि से भर देती है और अपनी उपस्थिति का दूर-दूर तक

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

www.akhandjyoti.org | www.awgp.org

परिचय देती है । दुष्टता भरी दुर्घटनाएँ दूर-दूर तक चर्चा का विषय बन जाती हैं, पर सेवा-सद्भावना भरे कार्य कुछेक लोगों की जानकारी में ही आते हैं । इतने पर भी उन्हें वैसा विज्ञापित होने की आवश्यकता नहीं होती है, जैसी कि दुष्ट-दुराचारी अपने नाम की चर्चा दूर-दूर तक होती सुन लेते हैं और अहंकार को फलितार्थ हुआ देखते हैं ।

इन परिस्थितियों में सत्प्रवृत्ति-संवर्द्धन जैसे सत्प्रयोजनों के लिए किन्हीं दूरदर्शी और सद्भावना-संपन्नों के कदम ही उठते हैं । अनुकरण के प्रत्यक्ष उदाहरण सामने न होने पर अपना उत्साह भी ठंडा होता रहता है । संचित कुसंस्कारों से लेकर वर्तमान प्रचलनों के अनेक अवरोध इस मार्ग में अड़ते हैं कि फूटे खंडहरों जैसी व्यवस्थाओं को किस प्रकार नए सिरे से भव्यभवन का विशाल रूप देने की योजना बनाई जाए तथा इसके लिए निरंतर कार्यरत रहने और आवश्यक साधन जुटाने की हिम्मत कैसे जुटाई जाए ?

इन दिनों की सर्वोपरि आवश्यकता

करने को तो काम एक ही है, पर वह है इतना बड़ा और व्यापक, जिसकी तुलना हजार छोटे-बड़े कामों के समूह से की जा सकती है । बदलाव पदार्थों का सरल है—लोहे तक को गलाकर दूसरे साँचे में ढाला जा सकता है; वेश-विन्यास से कुरूप को भी रूपवानों की पंक्ति में बिठाया जा सकता है, पर विचारों का क्या किया जाए, जो चिरकाल से बन पड़ते रहे कुकर्मों के कारण स्वभाव का अंग बन गए हैं और आदतों की तरह बिना प्रयास के चरितार्थ होते रहते हैं । सभी जानते हैं कि नीचे गिराने में तो पृथ्वी की आकर्षण-शक्ति ही पूरा-पूरा जोर हर घड़ी लगाए

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

समर्थ साधन चाहिए । इस निमित्त सामर्थ्य भर जोर लगाना पड़ता है । श्रेष्ठ काम कर गुजरने वालों में—आततायी-वर्ग द्वारा प्रयुक्त होने वाली शक्ति की तुलना में—सैकड़ों गुनी अधिक सामर्थ्य चाहिए । किसी मकान को एक दिन में—नष्ट किया जा सकता है और इसके लिए एक फावड़ा ही पर्याप्त हो सकता है, पर यदि उसे नए सिरे से बनाना हो तो उसके लिए कितना समय व कितना कौशल लगाना पड़ेगा, इसका अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है । श्रेय ध्वंस को नहीं, सृजन को ही मिलता रहा है ।

इन दिनों एक ही बड़ा काम सामने है कि जन-जन के मन-मस्तिष्क पर छाई हुई दुर्भावना के निराकरण के लिए कितना बड़ा, कितना कठिन और कितने शौर्य-पराक्रम की अपेक्षा रखने वाला पुरुषार्थ जुटाया जाना चाहिए ? यह कार्य मात्र उपदेशों से नहीं होगा । इसके लिए तदनुरूप वातावरण चाहिए । फिर उपदेष्टा का व्यक्तित्व ऐसा चाहिए जो अपने कथन व अपने व्यवहार में उतरने की कसौटी पर हर दृष्टि से खरा उतरता हो । बढ़िया बंदूक ही सहज निशाना लगाने में समर्थ होती है, टेढ़ी-मेढ़ी अनगढ़ नहीं; बालक का तमंचा प्रायः असफल निशाना ही लगाता रहता है । सदाशयता और सद्भावना का निजी जीवन में परिचय देने वाले ही दूसरों को ऊँचा चढ़ाने, आगे बढ़ाने और सृजनात्मक प्रयोजनों को पूरा कर पाने में समर्थ हो पाते हैं ।

विचारक्रांति आज की सर्वोपरि आवश्यकता है । हेय चिंतन ही दरिद्रता, अशिक्षा, अस्वस्थता, कुचेष्टा और दुष्प्रवृत्तियों का निमित्त है । इन बीमारियों का अलग-अलग इलाज कारगर नहीं हो सकता । रक्त-शोधक उपचार करने से ही आए दिन उगने वाले फोड़े-फुंसियों से छुटकारा

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

पोसने से पूरा होना संभव नहीं । विकास और सुधार के लिए तो अनेकानेक प्रकार के काम करने को पड़े हैं, पर यदि उन सबको समेटने की अपेक्षा विचारों का तारतम्य सही बिठा लिया जाए तो अन्यान्य बहुमुखी विकृतियों पर सहज काबू पाया जा सकता है । विचारों से ही कार्य विनिर्मित होते हैं । इन्हीं के कारण उत्थान-पतन की भूमिका दृष्टिगोचर होती है । यदि विचारों को शालीनता, सज्जनता, नीति-निष्ठा, कर्त्तव्यपरायणता और समाजनिष्ठा की दिशा में उन्मुख किया जा सके तो फिर शरीर एवं साधनों के माध्यम से मात्र वे ही कार्य बन पड़ेंगे, जो सुधार एवं विकास के लिए आवश्यक हैं ।

प्राचीनकाल में घर-घर अलख जगाने, संपर्क साधने और विचार-विनिमय करने जैसे कुछ ही कार्य ऐसे थे, जिनके सहारे लोकमानस का परिष्कार बन पड़ता था । अधिक लोगों को एक स्थान पर एकत्र करने के लिए सामूहिक कर्मकांडों की आवश्यकता होती थी, पर अब तो विज्ञान ने उन सभी कार्यों को सरल बना दिया है । यदि उन्हें योजनाबद्ध रूप से बड़े पैमाने पर किया जा सके तो क्षेत्र की व्यापकता होते हुए भी प्रयोजन की पूर्ति में अधिक कठिनाई न रहेगी ।

प्रेस अपने समय का एक वरदान है । इसके द्वारा कम समय में अधिक लोगों तक सस्ते आधार पर पहुँचना संभव हो सकता है । लाउडस्पीकर, टेपरिकार्डर, वीडियो तथा स्लाइड प्रोजेक्टर जैसे सस्ते उपकरण भी अधिक लोगों तक कम समय में विचारोत्तेजक प्रवाह पहुँचाने में समर्थ हो सकते हैं । संगीत-मंडलियाँ यदि योजनाबद्ध रूप से काम करें तो उनके सहारे भी जनजागरण का बड़ा काम बड़े परिमाण में बन सकना संभव हो सकता है । ऐसे ही अन्य छोटे-बड़े माध्यम भी ढूँढ़े जा

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

सकें । यह प्रचार प्रतिभासंपन्न लोगों की सहायता से और भी अच्छी तरह व्यापक परिधि में पूर्ण हो सकता है ।

इतने पर भी एक कठिनाई फिर भी ज्यों-की-त्यों रह जाती है कि अंतःकरण की गहराई तक प्रवेश करके उन्हें क्रियान्वित होते देखने की आशा-संभावना तभी पूरी होती है, जब उस हेतु प्रखर प्रतिभाएँ निखरकर, आगे बढ़कर आएँ और मोरचा सँभालें । यह कार्य घटिया लोगों का नहीं है, उनकी कृतियाँ उपहासास्पद बनती हैं । दूरवर्ती अनजान लोग किसी की वाचालता पर सहज विश्वास नहीं करते और जो मन-वचन-कर्म से आदर्शों के प्रति समर्पित हों, ऐसे लोग ढूँढ़े नहीं मिलते । इस विसंगति के कारण लोकमानस में अभीष्ट परिवर्तन बन नहीं पड़ता और अनेक विडंबनाओं की तरह धर्मोपदेश भी मनोरंजन का एक निमित्त कारण बनकर रह जाता है ।

कठिनाई यही दूर करनी है । स्रष्टा की दिव्यचेतना का अवतरण इन्हीं दिनों इस प्रकार होना है, जिसमें भावनाशील लोग अपनी कुत्सा-कुंठाओं पर विजय प्राप्त करें । ब्राह्मणोचित जीवन अंगीकार करें और अपना समग्र व्यक्तित्व इस स्तर का ढालें, जिसके प्रभावक्षेत्र में आने वाले सभी लोग यह विश्वास कर सकें कि उत्कृष्टता की पक्षधर आदर्शवादिता कार्यरूप में अपनाई जा सकती है और उसमें हानि-ही-हानि सहनी पड़े, ऐसी बात नहीं है । आर्थिक दृष्टि से सुविधा-साधनों में कुछ कमी हो सकती है, पर उसके बदले जो आत्मसंतोष, लोक-सम्मान और दैवी अनुग्रह उपलब्ध होता है, वह इतने कम महत्त्व का नहीं है, जिसे संकीर्ण स्वार्थपरता के बंधनों में बँधे रोते-कलपते जीवन की तुलना

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

www.akhandjyoti.org | www.awgp.org

इन दिनों यही होना चाहिए, संभवतः होने भी वाला है । भाव-संवेदना मात्र कल्पना-जल्पना के क्षेत्र तक सीमित न रहे वरन् कार्यक्षेत्र में उतरे और अपनी सामर्थ्य के अनुरूप प्रचार-प्रयोजनों में से उन्हें अपनाए, जो उसके लिए संभव और स्वाभाविक हैं ।

ऐसे परामर्श हर परिष्कृत अंतःकरण में दैवी प्रेरणा से अनायास ही अवतरित हो रहे हैं । आवश्यकता मात्र उन्हें हृदयंगम करने और कार्य रूप में परिणत करने भर की है ।

❑

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

मिशन की पत्रिकाएँ

(१) अखण्ड ज्योति (मासिक)

(धर्म एवं अध्यात्म के तत्त्वज्ञान का विज्ञान एवं तर्क-तथ्य-प्रमाण की कसौटी पर खरा चिंतन)

वार्षिक शुल्क-९६.००, आजीवन शुल्क-१८००.०० रुपया।

अखण्ड ज्योति अंग्रेजी (द्वि-मासिक)

वार्षिक शुल्क-६०.०० रुपया।

पता : अखण्ड ज्योति संस्थान, घीयामण्डी, मथुरा-२८१००३

फोन : (०५६५) २४०३९४०

(२) युग निर्माण योजना (मासिक)

(व्यक्ति, परिवार, समाज निर्माण एवं सात आंदोलनों की मार्गदर्शक पत्रिका)

वार्षिक शुल्क-४८.००, आजीवन शुल्क-९००.०० रुपया।

युग शक्ति गायत्री (गुजराती मासिक)

(गायत्री महाविज्ञान, धर्म, अध्यात्म एवं युगानुकूल विचार परिवर्तन का मार्गदर्शन)

वार्षिक शुल्क-७५.००, आजीवन शुल्क-१५००.०० रुपया।

पता : युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि, मथुरा-२८१००३

फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९

(३) प्रज्ञा अभियान (पाक्षिक)

(युग निर्माण मिशन के क्रियाकलापों एवं मार्गदर्शन का समाचार-पत्र)

वार्षिक शुल्क-२४.०० रुपया।

पाक्षिक वीडियो पत्रिका : युग प्रवाह

(युग निर्माण मिशन के प्रमुख क्रियाकलापों की दृश्य-श्रव्य जानकारी)

वार्षिक शुल्क-१५००.०० रुपया।

पता : शांतिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : ०१३३४-२६०६०२

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.